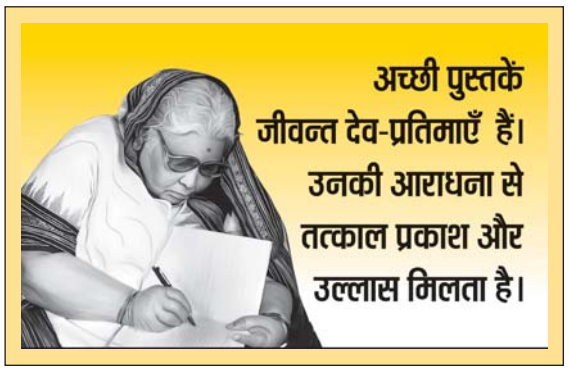

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

संस्थापक–संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 दिसम्बर 2015 (वर्ष-28, अंक-11) शांतिकुंज, हरिद्वार वार्षिक चंदा ₹ 40/-, विदेश में ₹ 500/-

E-mail : news.shantikunj@gmail.com news@awgp.in

पुस्तकों में निहित है जीवन का अमृत

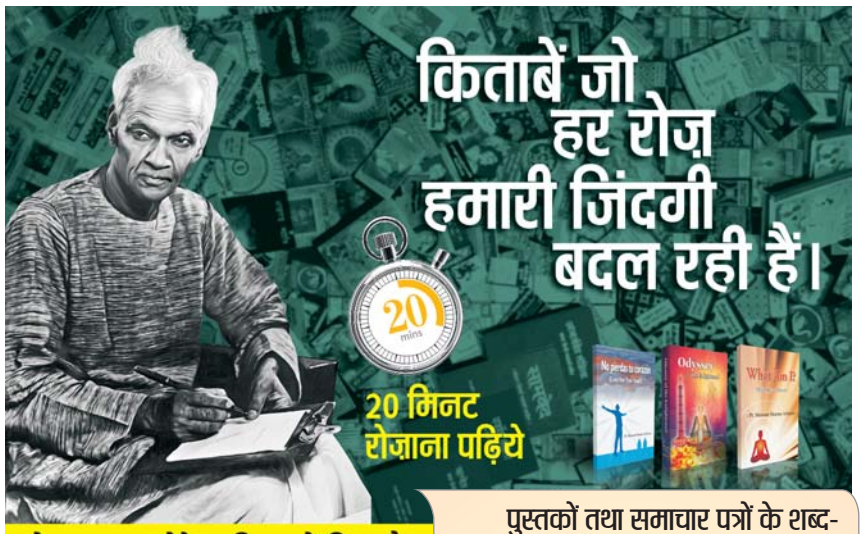

मेरा स्वरूप मेरे साहित्य में छिपा है।
-पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

पुस्तकों तथा समाचार पत्रों के शब्द-शब्द में अनुभव की अमरता है, जीवन पथ की कठिनाइयों के हल हैं, तरु की शीतलता है, नवविश्वास और महकते प्राण हैं, हृदय के सुरभित सुमन खिले हुए हैं, धरती को स्वर्ण बनाने वाले स्वर्णिम सूत्र हैं। आशा का शरद चंद्र हँस रहा है, तो उल्लास की रजत रश्मियाँ छिटक रही हैं।

सर्वोत्तम निधि-ज्ञान सम्पदा

जीवन का ज्ञान ही मनुष्य के जीवन को सही, कंटकविहीन मार्ग पर चलाने वाला अमृत है। जिस व्यक्ति के पास जीवन संबंधी ज्ञान, सुख-दुःख, हानि-लाभ, अच्छाई-बुराई, पाप-पुण्य, उतार-चढ़ाव का ज्ञान अधिक है, वही दूसरे से आगे निकलता है और सफल कहा जाता है।

जीवन का ज्ञान दो प्रकार से प्राप्त होता है। मनुष्य स्वयं जीता है। तरह-तरह की गलतियाँ करता है। प्रत्येक गलती के लिए सजा पाता है, सफलता के लिए प्रशंसा का पात्र बनता है। इस मृदुता और कटुता से उसका जिन्दगी संबंधी अनुभव बनता है। इस अनुभव के आधार पर ही वह जीवन में आने वाले संकटों और विषम परिस्थितियों को पार करता है। बिना अनुभव का कच्चा आदमी पग-पग पर गिरता है और सजा पाता है। यह अनुभव ही मनुष्य के जीवन का निचोड़ है।

जीवन की जटिलता

लेकिन अनुभव द्वारा शिक्षा प्राप्ति का यह मार्ग बड़ा लम्बा और जटिल है। कई व्यक्ति बार-बार गलती करते हैं, फिर भी अनुभव नहीं प्राप्त करते, न उससे लाभ उठाते हैं। जो व्यक्ति केवल अनुभवों के आधार पर आगे बढ़ते हैं, वे लाभ तो उठाते हैं, पर यह अनुभव बड़ी देर में वृद्ध हो जाने पर प्राप्त होता है। कोई-कोई अनुभव तो महीनों और वर्षों में प्राप्त होता है। कभी-कभी ऐसी बड़ी हानि उठानी पड़ती है जिसका मूल्य जीवनभर चुकाना पड़ता है।

दूसरे प्रकार का ज्ञान पुस्तकों में संचित, युगों-युगों से रक्षित, उत्तम मनोमुग्धकारी शैली में लिखित अनुभवों से प्राप्त होता है। यदि हम जीवन में प्राप्त अपने निजी अनुभवों पर ही निर्भर रहें, तो आधा जीवन इन्हीं प्रयोगों तथा उपयोगी नियमों को समझने और उपयोग में लाने के तरीकों में लग सकता है, क्योंकि जीवन का प्रत्येक सूत्र बड़ी भारी कीमत पर मिलता है।

जीवन एक बड़ी पुस्तक है। इसमें प्रत्येक दिन एक-एक पृष्ठ की तरह है, प्रत्येक पंक्ति पर नये रहस्य प्राप्त होते रहते हैं। लेकिन जीवन एक-दो दिन या एक-दो वर्ष का न होकर वर्षों का है। पूरे रहस्य हमें तभी प्राप्त होते हैं, जब हमारा पूरा जीवन ही समाप्त हो जाता है फिर उन अनुभवों, निष्कर्षों, बहुमूल्य सूत्रों और उपयोगी जीवन-नियमों को काम में लाने के लिए जीवन की साँसें ही शेष नहीं बचतीं।

ज्ञान का भंडार हैं पुस्तकें

इसलिए जितनी जल्दी हमें जीवन के सच्चे अनुभव, लाभदायक नियम और कायदे की बातें कहीं से प्राप्त हो जायें तथा जितनी जल्दी हम उन नियमों का प्रयोग करने लगें, उतनी ही जल्दी हम श्रेष्ठ जीवन का निर्माण कर सकते हैं।

जिस-जिस व्यक्ति ने जीवन के संबंध में जो-जो अनुभवपूर्ण बात लिखी हैं, वह उन्हें अपने दैनिक जीवन में धारण करता है। उनके बल पर आगे बढ़ता है। वह उन नियमों से लाभ उठाता है जिन पर चलकर महान् व्यक्तियों ने यश, प्रतिष्ठा और सफलता प्राप्त की थी।

जिसे आप पुस्तकें कहते हैं, वह कागज की सूखी, निष्प्राण, निस्पन्द, मरी हुई चीज नहीं है। पुस्तक तथा मासिक पत्र जीते-जागते जीवन की हलचल हैं।

पुस्तकों तथा समाचार पत्रों के शब्द-शब्द में अनुभव की अमरता है, जीवन पथ की कठिनाइयों के हल हैं, तरु की शीतलता है, नवविश्वास और महकते प्राण हैं, हृदय के सुरभित सुमन खिले हुए हैं, धरती को स्वर्ण बनाने वाले स्वर्णिम सूत्र हैं। आशा का शरद चंद्र हँस रहा है, तो उल्लास की रजत रश्मियाँ छिटक रही हैं।

ज्ञानियों का सत्संग करें

पुस्तकों की दुनिया में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि हैं, संसार के बड़े-बड़े विचारक, कवि, लेखक, नेता जीवित हैं। वे हमारी सहायता के लिए प्रतिपल तैयार हैं, वे दिन को दिन और रात को रात नहीं समझते। हम जब चाहें, जहाँ चाहें पुस्तकों में बैठे हुए अपने गुरुओं तथा मित्रों को साथ ले जा सकते हैं।

पुस्तकों के पृष्ठों में हमेशा सजा रहने वाला एक जीवित संसार है। इस मरणशील दुनिया में यह हाड़-माँस का नश्वर शरीर पता नहीं कब नष्ट हो जाये, पर जो अनुभव पुस्तकों में लिखे हैं, दीर्घ काल तक अक्षय रहने वाले हैं।

संसार की सब समस्याओं को हल करने के तरीके पुस्तकों में हैं। मानव जीवन और समाज का निगूढ़तम रहस्य भरा पड़ा है और हमारे लिए संचित है। सच मानिये, जो ज्ञान आप पचास वर्ष जीवित रहकर प्राप्त करते, वह पुस्तकों, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

जिस घर में पुस्तकों का निवास है, उसमें अनेक विद्वानों, विचारकों तथा महात्माओं का निवास है। आप अपनी आलमारी में असंख्य समझदार मनुष्यों को साथ रखे हुए हैं।

ऋषि तिरुवल्लुवर के शब्दों में, ''विद्वान पुरुष सुगंधित पुष्पों के समान हैं। वे जहाँ जाते हैं, अपने साथ मधुर सुगंध का आनंद ले जाते हैं, उनका सभी जगह घर है और सभी जगह स्वदेश है।''

विद्या धन है। अन्य वस्तुएँ तो उसकी समता में बहुत ही तुच्छ हैं। यह ऐसा धन है, जो अगले जन्मों तक, मनुष्य की पीढ़ियों तक परिवार में संस्कारों के रूप में साथ रहता है।

विद्या द्वारा संस्कारित की हुई बुद्धि आगामी जन्मों में क्रमशः उन्नति ही करती जाती है और उसका जीवन उच्चतम बनते हुए पूर्णता तक पहुँच जाता है।

कुएँ को जितना खोदा जाये, उसमें से उतना ही अधिक जल प्राप्त होता है, इसी प्रकार जितना स्वाध्याय, पठन-पाठन, लेखन इत्यादि किया जाये मनुष्य उतना ही ज्ञानवान बनता जाता है।

आयु का कोई प्रश्न नहीं। अध्ययन कभी भी, किसी भी उम्र में किया जा सकता है। चाहे मनुष्य बुड्ढा हो जाय, मरने के लिए चारपाई पर पड़ा हो, तो भी विद्या प्राप्त करने में उसे उत्साहित होना चाहिए। ज्ञान तो जन्म-जन्मान्तरों तक साथ रहने वाली दिव्य सम्पत्ति है। जो पढ़ा-लिखा है, वही नेत्रवान है। जिसने विद्या नहीं पढ़ी, वह अंधा है। उसके माथे में तो दो गड्ढे मात्र हैं, नेत्र नहीं। नेत्र तो ज्ञान के होते हैं।

आपका मित्र संभव है आपका साथ छोड़ कर चला जाये, किन्तु पुस्तकरूपी साथ सदा आपके लिए खुला हुआ है। स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान से जीवन में अनेक मूर्खताओं से सहज ही बचा जा सकता है।

व्यर्थ न गँवायें समय और जीवन

पुस्तकों में संचित विचारों ने बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। इन्हें निष्प्राण समझना बड़ी भारी भूल है। वे उतनी ही स्फूर्तिवान होती हैं, जितने उनके लेखक। जिस प्रकार एक शीशी में कोई अतीव गुणकारी औषधि जीवन में उपयोग के लिए सँभाल कर रखी जाती है, उसी प्रकार एक अच्छी पुस्तक में एक महान आत्मा के जीवन का सार-तत्त्व भरा होता है। उसी जिंदगी के निचोड़ से हम अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं।

यह मानव जीवन अति दुर्लभ है। बार-बार नहीं मिलता। इस जीवन के अनुभव हम दूसरे नए जीवन में काम में नहीं ला सकते। पता नहीं अगले जन्म में हमें यह सुरदुर्लभ जीवन प्राप्त हो या न हो। इसलिए स्वयं अपने अनुभवों के पकने की प्रतीक्षा किये बिना हमें पुस्तकों के स्वाध्याय द्वारा अधिकतम लाभ उठाना चाहिए।

आप अवकाश के क्षणों को व्यर्थ ही सिनेमा, क्लबों, व्यर्थ की बातचीत, ताश, चौपड़, गप्पबाजी, चुहल तथा बेमतलब की बातों में नष्ट कर देते हैं। ये मनोरंजन के साधन स्वस्थ नहीं हैं। स्वाध्याय का साधन स्वस्थ और गुणकारी है।

स्वाध्याय से आप अपनी गुप्त शक्तियों का विकास करते हैं और समुन्नत आत्माओं के सत्संग में रहते हैं। वे आपको पवित्र कल्पनाएँ और विचार को नयी दिशाएँ देते हैं। स्वाध्याय हमारे दैनिक जीवन का एक अंग होना चाहिए।

(वाङ्मय खण्ड-अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व, पृष्ठ 2.17 से संकलित-संपादित)

चलते रहो, चलते रहो!

ऐतरेय ब्राह्मण के एक गीत में गतिशील जीवन का समग्र ज्ञान-विज्ञान बड़ी सुन्दरता से व्यक्त किया गया है। इस गीत में भगवान इंद्र ने हरिश्चंद्र के पुत्र रोहित को सक्रिय जीवन का उपदेश इस प्रकार दिया है।

रोहित! श्रम से जो नहीं थका, ऐसे पुरुष को ही श्री मिलती है। बैठे हुए आदमी को पाप धर दबाता है। इन्द्र उसका मित्र है जो बराबर चलता रहता है। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

जो पुरुष चलता है, उसकी जाँघों में फूल-फूलते हैं। उसकी आत्मा भूषित होकर फल प्राप्त करती है। चलने वाले के पाप थककर सोये रहते हैं। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है, खड़े होने वाले का सौभाग्य चल पड़ता है। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

खोने का नाम कलि है, अंगड़ाई लेने वाला द्वापर है। उठकर खड़े होने वाला त्रेता है और चलने वाला कृतयुगी है। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

चलता हुआ मनुष्य ही मधु पाता है। चलता हुआ ही स्वादिष्ट फल चखता है। सूर्य का परिश्रम देखो, जो नित्य चलता हुआ कभी आलस्य नहीं करता। इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

युगशक्ति का प्रखर रूप संघशक्ति के माध्यम से ही उभरेगा

व्यक्ति नेतृत्व के स्थान पर गुण नेतृत्व-गण नेतृत्व की विधा विकसित करें

ईश्वरीय निर्धारण के अनुसार 'युग परिवर्तन' की गति तीव्रतर होती जा रही है। भली-बुरी दोनों प्रकार की शक्तियाँ अपने-अपने करतब दिखा रही हैं। एक ऐसा महाभारत छिड़ गया है, जिसमें हर किसी को किसी न किसी पक्ष से संघर्ष करना ही होगा। युग शक्ति का स्वरूप व्यक्ति आधारित नहीं, श्रेष्ठ गुण युक्त गण आधारित है। श्रेष्ठ विचार और भावना वाले कर्मठ व्यक्तियों का ऐसा गण, जो एकनिष्ठ होकर एक सबल हाथ की तरह काम करें, क्रांति की मशाल वही थाम सकेगा। उनकी संयुक्त संकल्प शक्ति ही परिवर्तन की क्रांतिकारी ज्वाला का रूप ले सकेगी। उसी के समर्थन में ईश्वरीय अनुग्रह की आभा उभरेगी। इस संयुक्त शक्ति को सही दिशा देने में व्यक्ति नेतृत्व सफल नहीं हो सकेगा, उसके लिए गण नेतृत्व की विधा को ही विकसित करना होगा। इसी विधा से हर व्यक्ति के दोषों से बचते हुए हर एक के गुणों का समुचित उपयोग उल्लास-उत्साहपूर्वक किया जा सकेगा। इस विधा को विकसित करने के क्रम में इस युग के दो मान्य आचार्यों- 'आचार्य श्रीराम शर्मा' तथा 'आचार्य विनोबा भावे' ने अध्यात्म के प्रकाश में व्यावहारिक मार्गदर्शन दिये और प्रयोग किए हैं। उक्त दोनों आचार्यों के संदर्भ से ही समय की माँग पूरी करने के लिए परिजनों की प्रेरणा हेतु यह आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है-

संघशक्ति सबल बने

युग परिवर्तन पूरे विश्व के लिए है। इस ईश्वरीय योजना में जहाँ व्यक्ति या गुट के अहं या स्वार्थ की घुसपैठ होने लगती है, वहीं उसकी प्रखरता घटने लगती है। संगठन बनने भी लगते हैं, बढ़ने भी लगते हैं लेकिन जब किसी व्यक्ति विशेष के हाथ में ही नेतृत्व चला जाता है, तो उसके गुणों के साथ-साथ उसके दोषों को भी फलित होने का अवसर मिल जाता है। दोष तो दोष हैं, उनके फलित होते ही गुणों की उपेक्षा होने लगती हैं और संगठन की शक्ति घटने लगती है। इसलिए समय की माँग को देखते हुए हमें गण नेतृत्व-समूह नेतृत्व के विकास की दिव्य साधना करनी होगी। जनशक्ति, संघशक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को प्रयत्नपूर्वक दूर करना होगा। इस संदर्भ में विनोबा भावे जी ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है-

'जन शक्ति खड़ी करने में, आम जनता की सम्मिलित शक्ति खड़ी करने में जैसे राज शक्ति बाधक होती है, वैसे ही आचार्य शक्ति, पुरुष विशेष की शक्ति भी बाधक होती है। इसी वास्ते मैंने कई बार कहा है कि पुरुष विशेष का जो युग युग था, वह युग गया। अब सब दूर एक महान शक्ति विश्व में प्रकट हुई है। एकता की आकांक्षा समग्र विश्व में इस वक्त भरी है। वह इस जमाने की एक शक्ति है। इसलिए अब जो महापुरुष पैदा होंगे, उनकी खूबी यह रहेगी कि वे सर्व सम्मति की शक्ति से काम करेंगे।'

आज कल बड़प्पन इसी बात में समझा जाता है कि मैं कहूँ और सब करें। इस अहंता के वशीभूत नेतृत्व करने वाला व्यक्ति सहभागियों-सहयोगियों की उचित सलाह भी नहीं मानता। उन्हें मान-सम्मान देना, तो दूर की बात हो जाती है। इसलिए युगऋषि ने परिजनों से कहा है कि *''बड़प्पन की महत्वाकांक्षाओं को घटायें, महानता प्राप्ति की उत्कंठा जगायें।'* 'अपने अंग अवयवों से' पत्रक में लिखा है कि *आत्म समीक्षा करते रहें कि आलस्य-प्रमाद को कहीं चुपके से आपके क्रिया कलापों में घुस पड़ने का अवसर तो नहीं मिल गया? अपने कृत्यों को दूसरों से अधिक समझने की अहंता कहीं छद्म रूप में आप पर सवार तो नहीं हो गयीं?*

आलस्य प्रमाद अपनी ही शक्तियों को उभारने नहीं देता और अहंता अपने सहकर्मियों की विशेषताओं को पनपने नहीं देती। इसलिए यदि संघशक्ति को सबल बनाना है, तो उक्त दोनों दोषों से मुक्त रहने की साधना करनी ही होगी। इसी तथ्य को युगऋषि के शब्दों में देखें-

'यदि तुम्हारा 'मैं' बढ़ेगा, तो संगठन-मिशन गलेगा। यदि तुम्हारों 'मैं' गलेगा तो मिशन-संगठन पुष्ट होगा, पनपेगा।'

इस दृष्टि से श्रेष्ठ पुरुषों की एक नई परम्परा चाहिए, जिनमें क्षमता तो विशेष हो किन्तु महानता इतनी हो कि स्वयं नेतृत्व का श्रेय न लेना चाहें। 'सलाह लो-सम्मान दो' की नीति अपनाकर आगे बढ़े। समूह नेतृत्व की क्षमता को विकसित करें।

यह कैसे हो?

समूह चेतना के जागरण का पहला चरण तो यही है कि लोग मतभेद भुलाकर उच्च लक्ष्य के लिए एकजुट होकर कार्य करें। अगले चरण में गण नेतृत्व का विकास किया जाना जरूरी है। यह कैसे होगा, इस संबंध में आचार्य विनोबा भावे ने कहा है-

'पुराने जमाने में एक से एक बढ़कर उच्च कोटि के नेता हो गये हैं, लेकिन अब उस प्रकार के नेतृत्व के दिन खत्म हो गये हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि आगे महापुरुष होंगे नहीं। बल्कि मैं मानता हूँ कि यदि मानव का विकास होना है, तो आज तक जो महापुरुष हुए हैं, उससे भी अधिक महान पुरुष भविष्य में होंगे, होने चाहिए। वे इतने महान होंगे कि व्यक्तिगत नेतृत्व का श्रेय कबूल नहीं करेंगे। वे अनेक में से एक होकर रहेंगे, समूह में सम्मिलित होकर रहेंगे। यही उनकी खास खूबी होगी।'

इस संदर्भ में उन्होंने विश्व के प्रसिद्ध कवि 'वर्डस्वर्थ' कि एक कविता का हवाला दिया है। उसमें उन्होंने अपनी कब्र पर लगाने के लिए एक सामान्य पत्थर चुना, चाहा कि उस पर 'वन ऑफ द मेनी' (बहुतों में से एक) लिखा जाय। विनोबा जी ने ईश्वरीय योजना के अनुसार इसी आदर्श को पालन करने की प्रेरणा देते हुए कहा है-

'दुनिया और अपने देश पर परमात्मा की बड़ी कृपा है कि उसने समाज का मार्गदर्शन करने वाले महापुरुष निरंतर भेजे। लेकिन अब भगवान ने तय किया है कि हम विचार भेजेंगे और वह विचार प्रत्येक मनुष्य तक पहुँच जायेगा। सब लोग उस पर सोचेंगे, तय करेंगे और मिलकर आगे बढ़ेंगे। ... नया युग आ रहा है। ऐसे समय में आप नये युग की तैयारी करेंगे या पुराने युग की भाषा बोलते रहेंगे कि हमें नेताओं की जरूरत है, उनके बिना हमें प्रेरणा और उत्साह नहीं मिल सकेगा। यह युग व्यक्ति विशेष का युग नहीं, यह तो संघ का ही युग आ रहा है।'

युगऋषि ने भी नवयुग को प्रज्ञायुग-दूरदर्शी विवेकशीलता का युग कहा है। उन्होंने तो इसे नया प्रयोग नहीं, अपनी पुरातन श्रेष्ठ परम्परा को पुनजीर्वित करने की बात कही है।

हमारी परम्परा

सर्वसम्मति से निर्णय करने की बात हमारी सनातन परम्परा रही है। उदाहरण देखें-

◆ गायत्री मंत्र को सर्वश्रेष्ठ मंत्र की संज्ञा दी गयी है। उसमें परमेश्वर से 'धियो यो नः प्रयोदयात्' (हम सबकी बुद्धि को प्रेरणा दें) यह प्रार्थना की गयी है। मेरी नहीं सबकी बुद्धि विकसित हो और सब मिलकर निर्णय लेते हुए एकमत होकर, एकजुट होकर आगे बढ़े।

◆ वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः (हम लोकहित चाहने वाले सभी व्यक्ति राष्ट्र को जाग्रत और जीवन्त बनाये रखेंगे) के उद्घोष में भी 'मैं' नहीं हम सबका समावेश किया गया है। इसी आधार पर ऋषिगण भी विभिन्न पर्वों पर एक साथ एक मत होकर निर्णय लेते थे, इसीलिए सर्वसम्मत निर्णयों के कारण कहीं विसंगतियों या विरोधों को पनपने का मौका ही नहीं मिलता था।'

◆ जैन और बौद्धमत में भी नेतृत्व का श्रेय व्यक्ति को नहीं, गुणों को ही दिया गया है। नमोंकार मंत्र में किसी एक को नहीं, सभी अरिहन्तो, सिद्धों, उपाध्यायों एवं सभी साधुओं-संतों को नमन किया गया है। बौद्ध उद्घोषों में बुद्धं (विवेकवानों), धर्म (नैतिक नियमों) तथा संघ (जन समूह) के प्रति समर्पित रहने की बात कही गयी है।

◆ व्यावहारिक रूप से देखें तो सामूहिक निर्णय लेने वालों को ही विजयश्री मिलती रही है। व्यक्तिगत योग्यता की दृष्टि से रावण उस समय सर्वश्रेष्ठ था। उस जैसा योद्धा, पण्डित, वैज्ञानिक दूसरा नहीं था। उसी विशेषता के अहंकार में वह समूह निष्ठा का महत्त्व भूल गया। सारे निर्णय स्वयं लेता रहा। गुणी परामर्शदाताओं, बुजुर्ग नाना-माल्यवान, भाई- विभीषण, पत्नी-मंदोदरी, पुत्र-प्रहस्त जैसे विवेकवानों का तिरस्कार करता रहा। प्रतिफल विनाश के रूप में सामने आया।

◆ श्रीराम भी स्वयं समर्थ थे, किन्तु उन्होंने सारे निर्णय सर्वसम्मति से लिये। वृद्ध- जामवंत, भाई- लक्ष्मण, सखा-विभीषण, सेवक- हनुमान, सुग्रीव, नल-नील आदि सभी के परामर्श से निर्णय लेते रहे। इसी आधार पर विजयी हुए, युग पुरुष कहलाये।

◆ कंस और दुर्योधन भी स्वयं गुणी तथा समर्थ थे। किन्तु सहपरामर्श के अभाव में गलतियाँ करते रहे और दुर्गति को प्राप्त हुए। कृष्ण भले ही अवतारी थे किन्तु ग्वालबालों के साथ 'सबमें से एक' के भाव से रहे, सहमति बनाकर काम करते रहे। महाभारत में भी सारथी बनकर रहे। पाण्डवों में भी किसी ने व्यक्तिगत नेतृत्व का अहं नहीं पाला। 'सबमें से एक' के रूप में सहमति पूर्वक आगे बढ़े और विजयी बने।

युगऋषि के प्रयोग

युगऋषि ने इस दिशा में अनोखे प्रयोग किए हैं। उन्हें समझें और गरिमापूर्वक उनके अनुसार आगे बढ़ें, तो न कहीं कोई व्यवधान टिके और न युग परिवर्तन की धारा कहीं रूके। कुछ नमूने देखें-

✦ अभी तक इतिहास में महापुरुषों का यही क्रम रहा है कि दीक्षा देने के लिए स्वयं या किन्ही विशिष्ट चयनित शिष्यों द्वारा दीक्षा देने की प्रक्रिया पूरी की जाती रही। युगऋषि में अपने शरीर के रहते और शरीर छोड़ने पर भी दीक्षा देने का विशेषाधिकार किसी को नहीं दिया। हर किसी नैष्ठिक स्वयंसेवक को दीक्षा देने का अधिकार दे दिया। दीक्षा देने वाला व्यक्ति कोई विशेष नहीं 'सबमें से एक' ही कहलाया जाता रहा। गण नेतृत्व का यह बेमिसाल प्रयोग है। अभी भी वह सफलतापूर्वक चल रहा है।

✦ पौरोहित्य की परंपरा में हमेशा समाज के विशिष्ट वर्ग को ही श्रेय दिया जाता रहा है। युगऋषि ने नर-नारी और सवर्ण-अवर्ण, सम्पन्न-विपन्न का भेद मिटाते हुए सभी को पौरोहित्य द्वारा लोकशिक्षण देने, जीवन में सत्प्रेरणाएँ भरने का कौशल और सम्मान प्रदान कर दिया।

✦ शक्तिपीठों को क्षेत्र में आध्यात्मिक ऊर्जा फैलाने के युगानुरूप प्रकाश वितरण केन्द्रों के रूप में स्थापित करने की योजना बनाई। उसमें उन्होंने इन केन्द्रों को प्राचीन मण्डलेश्वर-महामण्डलेश्वरों जैसी जिम्मेदारी संभालने की प्रेरणा दी। किन्तु साथ ही यह भी कहा कि हम अपने वरिष्ठों को मण्डलाधीश नहीं, बल्कि मंडल सेवक की भूमिका में देखना चाहेंगे।

✦ ट्रस्टियों को अथवा विशिष्ट प्रतिभावानों को उन्होंने हुकुम चलाने वाले नेता नहीं, समन्वय बैठाने वाले 'स्वयं सेवक' के रूप में कार्य करने की प्रेरणा दी है। इसके लिए वे भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देते रहे।

✦ राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण को प्रथम पूज्य का सम्मान दिया गया था। उन्होंने उस सम्मान को तो विनम्रता पूर्वक स्वीकार कर लिया, किन्तु अपने लिए सेवक वाले काम चुने। 1. अभ्यागतों के चरण धोना तथा 2. भोजन के बाद जूठी पत्तलें उठाना। यज्ञ में शामिल होने आए दुर्योधन सहित कौरवों तथा शिशुपाल जैसों के भी पैर सम्मान पूर्वक पखारे। सभी की जूठी पत्तलें प्रसन्नता पूर्वक उठाईं।

युगऋषि ने अपने अभिमान से जुड़े वरिष्ठों और विशिष्ट प्रतिभासम्पन्नों से यही शैली अपनाने की उम्मीद की है।

हम खरे उतरें

▲ यदि अपने संगठन में व्यवस्था सँभाल रहे वरिष्ठ जन कृष्ण जैसी श्रेष्ठ भावना और साधना अपना पायें, तो मजा आ जाए। युग निर्माण के महायज्ञ में भागीदारी के लिए जो भी व्यक्ति आयें-उत्साह दिखायें, उन्हें हृदय से सम्मान दें। उनकी भूख-जिज्ञासा को शान्त करने का-सद्विचारों का आहार उन्हें करायें। उन्हें तृप्त करने के क्रम में यदि कोई गंदगी-विसंगति उपजे तो प्रसन्नतापूर्वक उसकी सफाई-समाधान करने को अपना गौरवपूर्ण कर्तव्य मानकर उसे प्रसन्नतापूर्वक करें।

▲ पूज्य गुरुदेव जब भी कोई नयी योजना बनाते थे तो पहले सहयोगियों के साथ चर्चा करके उसकी रूपरेखा तैयार करते थे। सहमति के साथ उभरे बिन्दुओं के आधार पर कार्य योजना तैयार करते थे। उसे लिपिबद्ध करके सभी को सुनाते थे और सुझावों-सुधारों को सम्मानपूर्वक अंगीकार करते थे। इसी सामूहिक निर्णय के आधार पर समूह नेतृत्व की क्षमता विकसित करते रहे। हम सब को भी उन्हीं के पद्चिह्नों पर चलते हुए अपने अभ्यास और प्रयास इसी दिशा में बढ़ाने चाहिए। प्रज्ञा परिजनों के लिए सप्त महाव्रतों के क्रम में उन्होंने स्पष्ट अपील की है-

''सामूहिकता के साथ जुड़ी हुई शक्ति और प्रगति को गंभीरतापूर्वक समझें और विलगाव की अपेक्षा सम्मिलित सहयोग की व्यवस्था बनायें। ...कुछ लोगों को अपना मानने और उन्हीं की फरमाइशें पूरी करने, उपहार लादते रहने के व्यामोह से बचें। आत्मीयता को व्यापक बनायें। सबको अपना और अपने को सबका समझें। इस आत्मविस्तार का व्यावहारिक स्वरूप लोकमंगल की सेवा साधना से ही निखरता है। उदारता बरतें और बदले में आत्मसंतोष, लोकसम्मान तथा दैवी अनुग्रह की विभूतियाँ कमायें।''

मिल जुल कर कुछ करने का क्रम चल पड़ा है। अगले प्रगति चरण के रूप में गण नेतृत्व और सर्वसम्मति की क्षमता बढ़ायें। त्रेता और द्वापर वालों ने इसी आधार पर जीवन संग्राम में विजय पायी है, हम भी युग के महाभारत में विजयश्री इसी साधना से प्राप्त कर सकेंगे। यह हमारी परम्परा रही है। हम इसे पुनः निभा ही लेंगे। इसी हौसलें से आगे बढ़ें, जीवन को धन्य बनायें। **(क्रमशः अगले अंक में)**

हिमालय के उत्तुंग शिखर पर प्रतिष्ठित हुई एक दिव्य गायत्री शक्तिपीठ

मुनस्यारी में बने गायत्री चेतना एवं स्वावलम्बन केन्द्र में साधना-ध्यान से अंतस् में सहज ही समा जाती है देवात्मा हिमालय की दिव्यता

दिव्य शक्तिपीठ के पृष्ठ में दिव्यता की अनुभूति कराती देवात्मा हिमालय की पर्वत शृंखलाएँ (पंचाचूली)

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा 8 नवम्बर 2015 को देवभूमि उत्तराखंड के कुमाऊँ अंचल में स्थित अल्मोड़ा जिले के मुनस्यारी नामक कस्बे में हिमालय के उत्तुंग शिखर पर 'गायत्री चेतना साधना स्वावलम्बन केन्द्र' की प्राण प्रतिष्ठा की गयी। अपने अलौकिक आध्यात्मिक पुरुषार्थ से सारी दुनिया को प्रभावित करने वाले ऋषि-मुनियों की तरह युग साधकों को भी देवात्मा हिमालय की दिव्यता के दर्शन हों, साधना की अलौकिक अनुभूतियाँ हों, असाधारण उपलब्धियों मिलें, ऐसी आदरणीय डॉ. साहब द्वारा की संकल्पना इस केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही साकार हुई।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने सन् 1997 में जब यह जमीन पहली बार देखी, तभी इसे साधना-स्वावलम्बन केन्द्र के रूप में विकसित करने का मन बना लिया था। परिस्थितियाँ आसान नहीं थीं। हजारों लोगों के साथ-सहयोग की जरूरत थी, कई औपचारिकताओं को पूरा किया जाना था। धन-साधन जुटाना भी आसान नहीं था। अथक परिश्रम और बार-बार की यात्राओं के पश्चात् आज यह संकल्प साकार हुआ।

मैं चाहता हूँ कि देश–विदेश के साधक यहाँ आयें और देवात्मा हिमालय का ध्यान करते हुए उसकी अलौकिक आध्यात्मिक शक्तियों को जीवन में धारण करें, उनका विश्वव्यापी विस्तार करें। अध्यात्म ही विश्व में प्रेम, सद्भाव, शांति के विस्तार का एकमात्र उपाय है।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

हिमालय पारस है -डॉ. प्रणव जी

हिमालय की पूरी शृंखला इतनी निकट से कहीं और से दिखाई नहीं देती, जितने निकट से यहाँ दिखाई देती है। ऐसा लगता है जैसे देवात्मा हिमालय अपनी बाहें फैलाये हमें अपनी छाती से लगाने के लिए आतुर है।

परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री को कल्पवृक्ष और हिमालय को पारस बताया है। उस पारस का दिव्य दर्शन करने और स्पर्श प्राप्त करने का जो अवसर इस चेतना केन्द्र से सहजतापूर्वक होता है, वह कहीं अन्यत्र से नहीं।

चेतना केन्द्र के प्रत्येक कमरे में देवात्मा हिमालय की ओर की पूरी दीवारें शीशे की बनायी गयी हैं। वहाँ से भगवान शिव की पाँच उँगलियाँ कहे जाने वाली पंचाचूली के दिव्य दर्शन होते हैं। चाँदी–सा चमकने वाला नगाधिराज अरुणोदय की वेला में स्वर्णिम छटा अंतस् में अद्भुत तृप्ति, तुष्टि, शांति का संचार करती है। अगले दिनों चेतना केन्द्र की घंटियों और गायत्री मंत्र की गूँज पूरी घाटी में सुनाई देगी।

मुनस्यारी कस्बा भारत, चीन और नेपाल के संगम पर स्थित है। हिमालय के पीछे चीन और दायें कालीगंगा के बाद नेपाल देश की सीमाएँ आरंभ हो जाती हैं।

केन्द्र की विशेषताएँ

- चेतना केन्द्र की ऊँचाई ..... फीट की
- भारत, चीन, नेपाल की सीमा पर है मुनस्यारी
- स्वामी विवेकानंद की तपःस्थली है यह क्षेत्र
- मार्च-16 से आरंभ होंगे साधना शिविर
- शांतिकुंज से ही होगा शिविरों का संचालन

साधना करें, भागीदार बनें

प्राण प्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर दीपयज्ञ हुआ। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. साहब ने उपस्थित स्वयंसेवकों, नैष्ठिक परिजनों को केन्द्र की महत्ता और भावी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि साधनों से भवन तो तैयार होते हैं, लेकिन शक्तिपीठें साधनात्मक पुरुषार्थ से ही बनती हैं। इस चेतना केन्द्र के निर्माण में हजारों लोगों का प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग रहा है। यहाँ आकर परिजन साधना अनुष्ठान तो करेंगे ही, लेकिन इसे प्रखर और प्राणवान बनाने के लिए हमें आप सबका सहयोग चाहिए। आप जहाँ भी हैं, वहीं से इस केन्द्र के निमित्त 24 हजार गायत्री महामंत्र जप का एक अनुष्ठान या गायत्री मंत्र लेखन साधना करें। साधना करें, देवात्मा हिमालय के दिव्य अनुदान पायें।

प्रतिष्ठित हुईं गायत्री माता, श्रीरामेश्वर महादेव एवं यज्ञशाला

8 नवम्बर की प्रातः गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम पूरे विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर साथ गये युग साधकों, शांतिकुंज के स्वयं सेवकों के साथ लगभग 200 स्थानीय निवासी उपस्थित थे।

गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा के साथ रुद्राभिषेक के साथ श्रीरामेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा की गयी। तत्पश्चात् यज्ञशाला का शुभारंभ गायत्री यज्ञ के साथ किया गया।

आदरणीय डॉ. साहब नवप्रतिष्ठित माता की आरती उतारते हुए

श्रीरामेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक

वहाँ स्थित भोजनालय का उद्घाटन भी आदरणीय डॉ. साहब ने वेदमंत्रों के साथ पूजन करते हुए किया।

विशेष ध्यान : प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात् आदरणीय डॉ. साहब ने गायत्री माता मंदिर प्रांगण में विशेष ध्यान कराया। इस क्रम में उन्होंने सविता देवता, देवात्मा हिमालय, परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी और ऋषि-मुनियों की पवित्रता, प्रखरता, प्राण चेतना को रोम-रोम में धारण करने की साधना करायी।

ध्यान के उपरांत दिये संदेश में आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि अगले दिनों यह एक विख्यात आध्यात्मिक पर्यटन केन्द्र बनेगा। लोग आयें, इसे देखें, अपनी अनुभूतियाँ देश-विदेश में बाँटें, लेकिन यहाँ केवल साधकों के लिए ही आवास की व्यवस्था की जायेगी। यहाँ परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के नाम पर श्रीरामेश्वर महादेव की स्थापना की गयी है।

गायत्री चेतना एवं स्वावलम्बन केन्द्र, मुनस्यारी की भावी योजनाएँ

साधना- मार्च 2016 से यहाँ 5-5 दिवसीय साधना अनुष्ठान आरंभ हो जायेंगे। एक सत्र में 50 से 70 लोगों को शामिल किया जायेगा। एक कमरे में दो साधक रह सकेंगे। माइक से साधना के निर्देश दिये जाते रहेंगे।

साधना के अभाव में ही जीवन गड़बड़ा जाता है। यह साधना के लिए सर्वथा उपयुक्त एक ऐसा केन्द्र है, जहाँ से ईश्वर के स्थावर स्वरूप के साक्षात् दर्शन होते हैं। गीता में श्रीभगवान् ने अपने को स्थावरों में 'हिमालय' कहा है। ध्यान में जिस देवात्मा हिमालय की कल्पना करने के निर्देश परम पूज्य गुरुदेव देते हैं, वह यहाँ साक्षात् सामने दिखाई देता है।

यहाँ प्रकृति के साहचर्य में आनंद की अद्वितीय अनुभूतियाँ होती है। ऋषि-मुनियों जैसे सांसारिक कोलाहल से दूर एकान्त में साधना करने और अंतर्मुखी होने का अवसर है। प्रकृति की प्रतिकूलताओं को सहने का अभ्यास होता है। शिखर चूमने की अनुभूति अपनी विराटता और महानता का बोध कराती है। गायत्री माता की जीवन्त प्रतिमा अंतस् में दिव्यता का संचार करती है।

स्वावलम्बन- इस क्षेत्र में कभी गलीचे और आसन बनाने का उद्योग हुआ करता था। अब बेल्जियम के सिंथेटिक गलीचों के आजाने के कारण वह उद्योग बंद हो गया है। इस केन्द्र पर पिछले कई माह से गलीचा उद्योग को पुनः विकसित किया जा रहा है। क्षेत्रीय लोगों को इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है। क्षेत्र में बढ़ते रोजगार के साथ लोगों की चेतना केन्द्र के प्रति आस्था भी बढ़ती जा रही है।

जड़ी-बूटी उत्पादन के लिए शोधकार्य और नर्सरी बनाने की योजना है। इसके अलावा भूमि की उपलब्धता के आधार पर मसाले, जैम, अचार, मुरब्बा जैसे विविध स्वावलम्बन प्रशिक्षण आरंभ किये जायेंगे। गायत्री परिवार इन उत्पादों के विपणन की भी व्यवस्था करेगा।

आदरणीय डॉ. साहब दीपयज्ञ में उपस्थित लोगों को कार्ययोजना समझाते हुए

शिक्षा योजनाएँ- इस केन्द्र से भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का विस्तार किया जायेगा। क्षेत्र के लगभग 10,000 विद्यार्थियों को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। यहाँ से देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम चलाये जायेंगे।

शांतिकुंज से ही होगा केन्द्र की योजनाओं का संचालन

गायत्री चेतना एवं स्वावलम्बन केन्द्र का संचालन पूरी तरह से शांतिकुंज, हरिद्वार से ही होगा। फिलहाल वहाँ कुल 120 लोगों के रहने की व्यवस्था बन पायी है। इनमें शिविरार्थी और स्थायी परिव्राजकों के आवास की व्यवस्था होगी। दर्शक और पर्यटकों को ठहरने की व्यवस्था अन्यत्र ही करनी होगी।

इन दिनों वहाँ भीषण सर्दी है। मौसम की अनुकूलता के साथ मार्च 2016 से वहाँ पाँच दिवसीय साधना अनुष्ठान आरंभ हो जायेंगे। साधकों को आवेदन शांतिकुंज ही भेजने होंगे, जिसके संदर्भ में विस्तृत जानकारी अगले दिनों दी जायेगी। आरंभिक साधना शांतिकुंज में ही करनी होगी और वहाँ से चयनित साधकों को शांतिकुंज द्वारा ही मुनस्यारी भेजने की व्यवस्था की जायेगी।

यज्ञ करते परिजन

नींव के पत्थरों का भावभरा स्मरण

दीपयज्ञ के समय आदरणीय डॉ. साहब ने इस चेतना केन्द्र के निर्माण में नींव के पत्थर रहे कर्मठ सेनानियों को भावभरे अंतःकरण से याद किया। आरम्भ से ही क्षेत्र में गायत्री चेतना के विस्तार के लिए सक्रिय रतन गिरि, वहीं रहकर निर्माण कार्य में प्रमुख भूमिका निभाने वाले अहम योगदान देने वाले गुप्ता जी, राजीव जी, कर्नाटक जी, जमीन दानदाता पाग्ती जी, लकड़ी का काम करने वाले पाण्डेय जी, गणेशदत्त भट्ट जी आदि का सभी से परिचय कराया। निर्माण कार्य के सूत्र संचालक शांतिकुंज के अभियंता श्री गौरीशंकर सैनी के सतत अथक पुरुषार्थ के बारे में बताया। आपदा के महान अभियानों में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले डॉ. भीखूभाई पटेल, मूर्तिदानदाता श्री वाजपेयी जी, श्री ताराचंद जी का परिचय भी उन्होंने कराया।

चेतना केन्द्र के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आदरणीय डॉ. साहब के साथ उनके प्रमुख सहयोगी सर्वश्री सूरज प्रसाद शुक्ला, विनय वाजपेयी, ओंकार पाटीदार, संतोष सिंह, सुधीर भारद्वाज, जयसिंह यादव, उदयकिशोर मिश्रा, कृष्णा अमरुते थे।

यज्ञीय प्रेरणा और ऊर्जा के साथ हुआ सृजन चेतना का विस्तार

108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ से उभरा चेतना केन्द्र बनाने का संकल्प

लुधियाना (पंजाब) :

1 नवंबर को लुधियाना में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ केन्द्रीय प्रतिनिधियों के संचालन में सम्पन्न हुआ। भव्य कलश में यात्रा शहर एवं निकटवर्ती स्थानों से बड़ी संख्या में बहिनों ने भाग लिया। नगर की सीनियर डिप्टी मेयर श्रीमती सुनीता अग्रवाल ने सिर पर कलश धारण कर कलशयात्रा का प्रतिनिधित्व किया। बेटी बचाओ, नशा उन्मूलन, दहेज एक अभिशाप, बेरोजगारी जैसी ज्वलंत समस्याओं पर झाँकियाँ निकाली गईं।

यज्ञ का संचालन करती केन्द्रीय टोली

एक भाई को सम्मानित करते श्री शर्मा जी

इस अवसर पर केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने वर्तमान की विभीषिकाओं को जड़ से मिटाने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि भारत जगद्गुरु तभी बन सकता है, जब हम स्वयं में सुधार लाने की प्रक्रिया को अपनाते हुए समाजोत्थान के कार्यों में अपना योगदान देंगे। यज्ञायोजन की सफलता से परिजनों में चेतना केन्द्र बनाने हेतु संकल्प उभरा।

यज्ञायोजन के अवसर पर रक्तदान और नेत्रदान संकल्प शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें 64 यूनिट रक्तदान हुआ और 32 परिजनों ने नेत्रदान का संकल्प लिया।

शांतिकुंज से श्री कालीचरण शर्मा के नेतृत्व में श्री सुखदेव शर्मा एवं श्री सूरत सिंह अमृते की टोली पहुंची थी। कार्यक्रम में उद्योगपति श्री सुनील शर्मा, रविनंदन शर्मा, श्री महेंद्र पाल जैन, नामधारी समुदाय के मुखी श्री गुरमुख जी, विहिप के श्री दयाशंकर , प्रदीप मिश्रा, आशीष बोनी एवं सर्वश्री राजीव शर्मा, राजेश शर्मा, सुनील मिश्रा, प्रेम शर्मा, आदि ने प्रमुख रूप से भाग लिया।

यज्ञ के साथ हुई गायत्री चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा

तिसरी, (गिरीडीह, झारखण्ड) :

गायत्री चेतना केन्द्र तिसरी में साहित्य विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर की तिथियों में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। साथ ही केन्द्र में गायत्री माता, पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी की प्राण प्रतिष्ठा हुई। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज की टोली पहुंची थी।

यज्ञ की शुरुआत में बहिनों की अगुवाई में भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। यज्ञ में पहुंचे लोगों को बहिनों ने घर, परिवार की शांति में बाधक दुर्व्यसनों को छोड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यकर्ता भाइयों ने युवाओं को नशे के दुष्परिणामों पर बताया।

भाइयों के एक अलग दल ने बेरोजगार युवा वर्ग को स्वावलंबन का प्रशिक्षण देते हुए अपना योगदान समाज के विकास में देने के लिए उत्साहित किया। कार्यकर्त्ताओं की मेहनत से अनेक बहिनों, युवाओं एवं बुजुर्गों ने दुर्व्यसन छोड़ने का संकल्प लिया व सत्साहित्य का नियमित अध्ययन करने का संकल्प लिया।

उद्घाटन अवसर पर कलश पूजन करती बहिनें

चूंकि इस समय पंचायत चुनाव का क्रम चल रहा था, फिर भी गिरीडीह जिले के कोने-कोने से परिजन बड़ी संख्या में पहुंचे। सभी कार्यक्रम की रूपरेखा से काफी प्रभावित हुए। विभिन्न संस्कार भी बड़ी संख्या में हुए। कार्यक्रम में जिले के गाँव-गाँव, घर-घर में युग निर्माण का सत्साहित्य पहुंचाने के लिए ज्ञानरथ की शुरुआत हुई। इस क्रम में श्री हरी यादव, कामेश्वर सिंह, रामबिलास मोदी, अरुण मोदी, सुरेश यादव, नरेश यादव आदि की प्रमुख भूमिका रही।

नवरात्र की पूर्णाहुति में छोड़े दुर्व्यसन

हजारीबाग (झारखंड) :

गायत्री शक्तिपीठ खचांजी तालाब में इस वर्ष सामूहिक प्रयास से आश्विन नवरात्र साधना का विशेष आयोजन हुआ। विपरीत परिस्थितियों के बीच सामूहिक अनुष्ठान हुआ। अनुष्ठान की पूर्णाहुति के अवसर पर शहर एवं निकटवर्ती स्थानों से बड़ी संख्या में लोग अपनी साधना की पूर्णाहुति करने पहुंचे। पूर्णाहुति में 56 लोगों ने दुर्व्यसन छोड़ने का संकल्प लिया।

सभी ने अपनत्व एवं सामूहिकता का परिचय देते हुए भविष्य में भी सामूहिक अनुष्ठान एवं साहित्य विस्तार के लिए अपना-अपना संकल्प दोहराया। इस अवसर पर 11 घरों में वांग्मय स्थापना हुई। 100 से अधिक अखण्ड ज्योति के पाठक बने। 500 से अधिक गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका निःशुल्क वितरित की गयी। यज्ञायोजन में शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी सर्वश्री मनोज कुमार व उपजोन समन्वयक शिवनारायण साहू, राजेन्द्र भगत, बृजकिशोर मेहता, राजाराम, डॉ ललिता राणा आदि का विशेष सहयोग रहा।

यज्ञ के संग रक्तदान भी

श्रीगंगानगर, (राजस्थान) :

गायत्री शक्तिपीठ श्रीगंगानगर में दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए शृंखलाबद्ध यज्ञायोजन सम्पन्न करा रहा है। 4 सितम्बर से प्रारंभ हुए यज्ञीय शृंखला में 15 स्थानों पर 1 से 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं। यज्ञ के दौरान जिन-क्षेत्रों में गायत्री महायज्ञ हो रहा है, वहाँ युगऋषि द्वारा रचित सत्साहित्य की स्थापना की जा रही है। साथ ही युवाओं को इन सत्साहित्यों का नियमित अध्ययन करने हेतु संकल्पित कराया जा रहा है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया।

यज्ञ के साथ युवाओं रक्तदान के लिए आगे आ रहे हैं।

नवरात्र में बाल पुरोहितों ने की ग्राम प्रदक्षिणा

सेंधवा, बड़वानी (मध्यप्रदेश) :

अखिल विश्व गायत्री परिवार सेंधवा के गुरुकुल के विद्यार्थियों (बाल पुरोहित) ने नवरात्रि के आठ दिनों में महाराष्ट्र के पचोरा तहसील के 72 गाँवों व मध्यप्रदेश के कसरावद और बड़वानी जिलों के 144 गाँवों की यात्रा की।

झाँकियाँ प्रस्तुत करती नन्हीं बालिकाएँ

उन्होंने गाँव-गाँव में चौपाल सभाएँ की व ग्रामीणों को दैनिक चर्या, संस्कृति के पाँच आधार- गौ, गंगा, गीता, गायत्री एवं गुरु का महत्व बताया और संस्कृति की रक्षा का संकल्प दिलाया। ट्रस्ट मंडल के श्री दिलीपजी कानूनगो एवं महेश सोनी ने हरी झंडी दिखाकर टोलियों की विदाई की।

बाल पुरोहितों के नगर आगमन पर नगर में सद्भावना यात्रा निकाली गई। यात्रा के दौरान कन्याओं द्वारा ज्वारा पूजन एवं बाल पुरोहितों द्वारा शस्त्र प्रदर्शन आदि की झांकियाँ निकाली गईं। गायत्री शक्तिपीठ सेंधवा में 5 दिनों तक स्वस्थ रहने की कला, प्राकृतिक चिकित्सा, आहार चिकित्सा, जड़ी-बूटी, पर्व-त्यौहारों का महत्व आदि विषयों पर श्री मेवालाल पाटीदार द्वारा प्रकाश डाला गया। पूर्णाहुति एवं कन्यापूजन के साथ परिजनों ने नवरात्रि अनुष्ठान का समापन किया

महायज्ञ के साथ सेवानिवृत

गोड्डा, (झारखंड) :

02 अक्टूबर को डांडे में राजकीय मध्य विद्यालय से सेवानिवृत्त हो रहे 100 शिक्षकों का विदाई समारोह नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के बताये सुसंस्कारों व दिशा-निर्देशों को पालन का करने का संकल्प लिया।

जिला शिक्षा पदाधिकारी श्री तुलसीदास ने कहा कि समाज के नव निर्माण में बच्चों के योगदान को कम नहीं आंकना चाहिए। छोटे-छोटे बच्चों ने जिस तरह अपने शिक्षकों के सेवानिवृत्ति के अवसर पर यज्ञ के माध्यम से अच्छे विचारों के प्रेषण का कार्य किया है, यह उनके अभिभावकों एवं उनके शिक्षकों की मेहनत को दर्शाता है।

सामूहिक तर्पण कर पितरों को दी श्रद्धांजलि

इस वर्ष गायत्री परिवार ने पितृ पक्ष में सामूहिक तर्पण का विशेष अभियान चलाया। इसके अंतर्गत देश भर के गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं प्रज्ञा संस्थानों में पूरे पन्द्रह दिन तर्पण का क्रम चला। इसमें गायत्री परिवार के साथ स्थानीय लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। सभी ने वैदिक रीति से किये इस कर्मकाण्ड में श्रद्धा के साथ भागीदारी की। तर्पण के बाद परिजनों ने ज्ञानप्रसाद के रूप में युग साहित्य वितरित किया, तो अनेक लोगों ने अपने पितरों की याद में वृक्षारोपण करने का संकल्प लिया। इस अभियान में तर्पण में लगने वाले सामग्री की व्यवस्था प्रज्ञा संस्थानों ने अपनी ओर से की।

गायत्री ज्ञान मंदिर, टेक्समेको बेलघरिया, कोलकाता में अमावस्या को हुए सामूहिक तर्पण में टैक्समेको के वरिष्ठ अधिकारियों, रेलवे के अधिकारी एवं अन्य गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। संस्कार श्री प्रहलाद शर्मा ने करवाया।

भीलवाड़ा (राजस्थान) में दो पारियों में श्राद्ध संस्कार हुआ। इसमें 150 से अधिक लोगों ने भागीदारी की। इसका वैदिक कर्मकाण्ड श्री केदारदास वैष्णव ने करवाया।

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में श्राद्ध संस्कार करवाने वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं पत्रकार बंधु के साथ स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में पहुँचे। इस अवसर पर युगऋषि के साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गयी थी। लोगों ने अपनी पूर्वजों की स्मृति ज्ञान प्रसाद के रूप में बड़ी संख्या में युग साहित्य वितरित किया।

गायत्री प्रज्ञा मंडल, हुडको भिलाई नगर, (छत्तीसगढ़) में सामूहिक तर्पण का क्रम पिछले 12 वर्ष से चलाता आ रहा है। पांच सौ से

भिलाई नगर में तर्पण संस्कार

अधिक लोगों ने वैदिक रीति से श्राद्ध संस्कार कराया। वैदिक कर्मकाण्ड श्रीकृष्ण कुमार बेलचंदन एवं श्री झड़ीराम देवांगन ने सम्पन्न कराया।

गायत्री शक्तिपीठ अंकपात नगर, उज्जैन (मध्यप्रदेश) में सामूहिक तर्पण के दौरान गायत्री अनुष्ठान करने एवं देवयज्ञ के तहत एक बुराई छोड़ने व एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प दिलाया गया। 2 अक्टूबर को गायत्री शक्तिपीठ, लायंस क्लब, पॉलीटेक्नीक कॉलेज के एनसीसी छात्रों के साथ मिलकर शक्तिपीठ व सिद्धनाथ घाट पर सामूहिक श्रमदान कर स्वच्छता अभियान का संदेश दिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के आत्मीय स्वजनों से

विनम्र अनुरोध

हमारे पथ प्रदर्शक-आराध्य कुलपिता और कुलमाता **ऋषियुग्म पं. श्रीराम शर्मा आचार्य-वंदनीया भगवती देवी शर्मा** के युगांतरीय कर्म के लिए सर्वतोभावेन समर्पण की आकांक्षा एवं आप सबके सहयोग, सहकार एवं आशीर्वाद की कामना के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में **पं.श्रीराम शर्मा आचार्य शोध पीठ** की स्थापना की विनम्र घोषणा करते हुए देसंविवि परिवार को हर्ष की अनुभूति हो रही है।

इसके अन्तर्गत अधोलिखित चरणों पर प्रथमतया निम्न अनुसंधान कार्य सम्पन्न किये जाने हैं-

◘ जहाँ-जहाँ चरण पड़े गुरुवर के... इस शीर्षक के अन्तर्गत ♦पूज्य गुरुदेव व वन्दनीया माताजी भारत अथवा विदेश में जहाँ-जहाँ भी प्रवास पर गये उन आयोजन स्थलों के नाम, ♦आयोजकों का नाम, ♦पूरा पता, ♦प्रवास का उद्देश्य, ♦प्रवास में साथ-साथ चल रहे परिजनों का (जितना भी उपलब्ध हो) विवरण ♦प्रवास के दौरान जिन-जिन स्थानों में गुरुदेव के कार्यक्रम सम्पन्न हुए उन गांवों, कस्बों या शहरों के नाम, ♦प्रवास से जुड़े अविस्मरणीय साक्ष्य, ♦गुरुदेव के प्रवचनों का संकलन (यदि उपलब्ध हो), ♦परिवार/कार्यकर्त्ता गोष्ठी के संस्मरण, ♦प्रवास के दौरान दुर्लभ फोटो/समाचार कटिंग/आडियो-वीडियो आदि की जानकारी यदि उपलब्ध हो तो साफ-साफ शब्दों में लिखकर अथवा कम्प्यूटर से हिन्दी में कम्पोज कराकर तथा उनसे सम्बन्धित सामाग्रियाँ पार्सल निम्न पते पर अविलम्ब भेजने की अवश्य कृपा करें।

◘ स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे हमारे गायत्री परिवार.... इस शीर्षक के अन्तर्गत ♦गायत्री परिवार के वे सदस्य जो भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे हैं, उनके नाम, ♦पूरा पता, ♦उस दौरान पारिवारिक/व्यावसायिक स्थिति, ♦स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका, ♦किन रूपों में सक्रिय रहे? (इसके साक्ष्य यदि उपलब्ध हों) ♦पूज्य गुरुदेव अथवा किन्हीं अन्य स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के सान्निध्य का अनुभव, ♦अन्य किसी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभायी हो, तो उसका विवरण, ♦गायत्री परिवार से कब से जुड़े? तथा ♦गायत्री परिवार के ऐसे परिजन जो स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे किसी अन्य भारतीय युद्ध आदि में शहीद हो गये हों अथवा अब नहीं रहे हों, उनके परिजनों के द्वारा सुस्पष्ट जानकारियाँ अविलम्ब भेजने की अवश्य कृपा करें।

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 मोबाइल- 09258369615, E-mail: baldau.dewangan@dsvv.ac.in

किसी का सुधार उसके उपहास से नहीं, उसे नये सिरे से सोचने और बदलने का अवसर देने से होता है।

संगीत में सकारात्मकता बढ़ाने की दिशा में एक कदम 'वॉइस ऑफ प्रज्ञा'

जबलपुर (मध्य प्रदेश) : शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी दो दिवसीय प्रवास में जबलपुर पहुंचे। आयुध निर्माण की फैक्ट्री तथा 'वाइस आफ प्रज्ञा' संगीत प्रतियोगिता में भागीदारी करते हुए उपस्थितजनों को युगऋषि का विशेष संदेश दिया।

आयुध निर्माणी की फैक्ट्री में: आद. श्री उपाध्याय जी ने 26 सितम्बर को आयुध निर्माण की फैक्ट्री में आयोजित कार्यक्रम में 'आध्यात्मिक जीवन शैली से तनाव प्रबधन' पर मार्गदर्शन देते हुए आध्यात्मिक जीवनशैली पर प्रकाश डाला।

इस दौरान अपर महाप्रबन्धक, तोपगाडी निमाणी के अपर महाप्रबन्धक सहित सभी अधिकारी सपरिवार मौजूद थे। इसके अलावा जवाहरलाल नेहरू कृषि वि.वि. जबलपुर, ज्ञानगंगा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइन्स कालेज-जबलपुर तथा इंजीनियरिंग कालेज-जबलपुर में भी श्री उपाध्याय जी ने युगऋषि के संदेश दिये।

'वॉइस ऑफ प्रज्ञा' संगीत प्रतियोगिता : पं. रामकिंकर स्मृति मानस भवन सभागार में 27 सितम्बर को 'वॉइस ऑफ प्रज्ञा-2015' युग संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसका उद्देश्य युग संगीत के प्रति कलाकारों में रुचि पैदा करना एवं इस क्षेत्र में श्रेष्ठ कलाकारों को उभारने के साथ-साथ नये कलाकारों को प्रोत्साहित करना था।

विभिन्न वर्ग में प्रथम आयी छात्राओं के साथ मुख्य अतिथि आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी एवं प्रस्तुति देती एक नन्हीं बालिका

शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता आद. श्री उपाध्याय की गरिमामयी उपस्थिति में विशेष अतिथि मध्यप्रदेश के राज्यमन्त्री श्री शरद जैन ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर आद. श्री उपाध्याय जी ने प्रतिभागी बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए उन्हें संगीत में सकारात्मकता लाने व उसको सिर्फ गायन-वादन तक सीमित न रखकर उसकी खुशबू और मधुरता जीवन में भी उतारने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि संगीत सिर्फ मनोरंजन तक सीमित न रहे बल्कि उसके ताने-तराने मन-अन्तःकरण की गहराई में भी उतरें और भाव प्रेम का ऐसा मधुर प्रवाह पैदा करें जिससे संगीतज्ञ और श्रोताओं का समूचा अस्तित्व उसकी स्वर-लहरियों से सराबोर हो उठे। उन्होंने संगीत को शब्द ब्रह्म तक पहुँचने के मनोरम व प्रभावी मार्ग के रूप में प्रतिपादित किया और कहा कि यह सृष्टि के सूक्ष्मतम आदिनाद की स्थूल किन्तु स्निग्ध अभिव्यंजना है। यदि यह साधना के रूप में उपयोग हो सके तो इससे न केवल संगीत ही सार्थक होगा, अपितु इससे गाने-सुनने वाले सभी जनों का जीवन भी धन्य हो जाएगा। राज्यमंत्री श्री जैन ने संगीत के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी।

पाँच चरणों में सम्पन्न हुए इस श्रेष्ठ स्वर चयन प्रतियोगिता कार्यक्रम में विभिन्न संगीत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संगीत गायन की परीक्षा देने वाले करीब 150 संगीत प्रेमी बच्चों ने भाग लिया। जिन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा गया था। प्रज्ञागीतों के गायन के माध्यम से प्रखरप्रज्ञा रूप युगपुरुष के चरणों में भक्ति के अर्घ्य समर्पित किए।

प्रतियोगिता के निर्णायक शांतिकुंज के संगीतज्ञ श्री प्रताप शास्त्री, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीविलास मण्डपे एवं श्री गोविन्द श्रीवास्तव थे। कार्यक्रम के अन्त में श्रेष्ठ कलाकारों को स्तरानुसार पुरस्कृत किया गया तथा अन्य प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये।

संयोजक श्री गोविन्द श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा तथा श्री ओमप्रकाश सेन ने आभार प्रकट किया। इस दौरान गायत्री परिजनों सहित महापौर डॉ. स्वाति बोडबोले, अपर महाप्रबन्धक श्री काशीनाथ पाण्डेय, आई.एम.ए. जबलपुर के अध्यक्ष डॉ. सुधीर तिवारी सहित अनेक गणमान्य मौजूद रहे। आयोजन को सफल बनाने में सर्वश्री बेनीराम सराटकर, प्रकाश सेन, कमल राय, शंकर कनौजिया, कमलेश अग्रवाल आदि परिजनों की विशेष भागीदारी रही।

कार्यकर्त्ता गोष्ठी : 27 सितंबर को महाकौशल क्षेत्र से जुड़े 18 जिलों के कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी गायत्री शक्तिपीठ मोहन नगर में आयोजित हुई। जिसमें आदरणीय श्री उपाध्याय जी ने कार्यकर्त्ताओं को समूह मन के बारे में जानकारी देते हुए उसकी साधना करने की प्रेरणा दी। साथ ही सभी से मुलाकात कर सभी की शंकाओं के समाधान दिये।

जीवन को संवारती है 'अखण्ड ज्योति'

चण्डीगढ़ : 25 अक्टूबर को अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन भगवान श्री परशुराम भवन सेक्टर 37सी में हुआ। इस सम्मेलन में चण्डीगढ़, पंचकुला, मोहाली सहित पंजाब व हरियाणा के विभिन्न जिलों से परिजन व प्रबुद्ध वर्ग के गणमान्य लोग पहुंचे। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से डॉ ओ.पी. शर्मा की टोली पहुंची थी।

सम्मेलन में अखण्ड ज्योति के पाठक व परिजनों ने पूज्य गुरुदेव द्वारा सिंचित अखण्ड ज्योति के महत्त्व, उद्देश्य को जाना। डॉ शर्मा ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की संवाहिका पत्रिका-अखण्ड ज्योति की उपयोगिता पर प्रतिपादन करते हुए उसे वर्तमान समय की समस्याओं के निदान के रूप में बताया। अखण्ड ज्योति नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक क्रांति के बीज बोने वाली महत्त्वपूर्ण पत्रिका है।

सन् 1940 से लेकर अब तक बिना विज्ञापन के छपने वाली अखण्ड ज्योति को पूज्य गुरुदेव ने अपने तप से सिंचित किया है। अध्यात्मवाद के वैज्ञानिक प्रतिपादन के साथ 75 वर्ष से निरंतर प्रकाशित होने वाली अखण्ड ज्योति ने प्रबुद्ध वर्ग में अपना एक विशेष स्थान बनाया है। अनेक पाठकों का जीवन, परिवार सुधारने में भी यह पत्रिका एक मील का पत्थर साबित हुई है। तर्क, तथ्य एवं प्रमाण के साथ प्रकाशित हो रही अखण्ड ज्योति पर विस्तारपूर्वक विवेचना से उपस्थित जनसमुदाय काफी प्रभावित हुआ। अखण्ड ज्योति में निरंतर प्रकाशित होने वाले नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक व आध्यात्मिक क्रांति के आलेखों ने सभी के मनों में एक जगह बना रखी है।

राजकीय मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अशोक अत्रि ने अखंड ज्योति के संपादक आदरणीय डॉ प्रणव पण्ड्या जी का आभार मानते हुए इसी विषय पर एक व्याख्यानमाला अपने कॉलेज परिसर में आयोजित करने की बात कही। इस अवसर पर भाजपा के जिलाध्यक्ष श्री संजय टंडन, पार्षद श्री अरुण सूद, पार्षद लक्ष्मीकांत तिवारी, अभिनेता अमित चांदपुरी आदि उपस्थित थे। सम्मेलन में सर्वश्री उमाशंकर शर्मा, इन्दू भूषण झा, प्रकाश शर्मा आदि की प्रमुख भूमिका रही।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि एवं उपस्थित जनसमुदाय

सम्मानित हुए शिक्षाविद्

सम्मानित हुए शिक्षक-शिक्षिकाएँ

भोपाल (मध्यप्रदेश) : 13 सितंबर को गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में प्रांतीय शिक्षक सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें भोपाल सहित प्रदेश के लगभग 225 प्राचार्यों एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया। प्रांतीय संयोजक श्री शंकरलाल पाटीदार ने सभी का स्वागत करते हुए भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रारंभ से लेकर अभी तक की प्रगति पर चर्चा की। इसकी शुरुआत बच्चों के भविष्य को संवारने, भारतीय संस्कृति की जानकारी देने, नैतिक मूल्यों की वृद्धि, योग, पर्यावरण एवं खेलकूद की गतिविधियों में विकास के लिये की गई थी। इसे ऊँचाइयों तक पहुँचाने में आप प्राचार्यों एवं शिक्षकों का अतुलनीय सहयोग है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री आर के. आमेटा ने भा.सं.ज्ञा. परीक्षा कार्यक्रम को राष्ट्रव्यापी बनाने में उनके योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। विशेष अतिथि श्री राहुल देसंविवि, ने गुरु की गरिमा और महिमा के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया।

जोन प्रभारी श्री शिव कुमार पांडे, प्रांतीय समन्वयक श्री एस.आर.चौधरी, श्री प्रमोद पराने, श्री व्ही. विजयकुमार आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री जे.पी. माहुले, के.पी.रावत, के.एल.पटेल, साधना पंडया आदि का सराहनीय योगदान रहा। समापन अवसर पर श्री एम.के. गुप्ता एवं डॉ. निधि पटेल ने प्रतिभागियों को मंत्र चादर, युगसाहित्य सेट और वाङ्मय भेंट किया।

युवाओं में मंत्र लेखन के प्रति जागरुकता बढ़ी

भुसावल, (गुजरात) : गुजरात के युवाओं को विधेयात्मक चिन्तन की ओर मोड़ने के उद्देश्य से भुसावल में प्रान्तीय युवा चेतना शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में युवाओं को व्यक्तित्व परिष्कार, जीवन लक्ष्य एवं उसकी प्राप्ति तथा युवा जागृति अभियान के बारे में केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने विस्तार से जानकारी दी।

केन्द्रीय प्रतिनिधि एवं शांतिकुंज युवा प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री के.पी. दुबे ने कहा कि नये युग के निर्माण के लिए युवाशक्ति को जागरूक होना होगा। सतयुग के सपने को साकार अगर कर सकती है तो वह है जागरूक युवाशक्ति। अगर युवा शक्ति का सुनियोजन हो जाय तो फिर कोई कार्य असम्भव नहीं रहेगा। आवश्यकता है युवाओं को जाग्रत होने की। श्री पीयूष रस्तोगी ने कहा कि तालमेल बनाये रखकर ही बड़े कार्य किये जा सकते हैं। हमें भी नवनिर्माण के अभियान को सफल बनाने हेतु संगठित होना चाहिए। डॉ. कुन्ती साहू ने भी शिविर को संबोधित किया।

शिविर में सामूहिक मन्त्रलेखन अभियान चलाने एवं बाल संस्कारशालाएँ आयोजित करने पर भी प्रतिभागियों को प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में श्रीराम स्मृति उपवन का भूमि पूजन भी किया गया।

इस शिविर में भुसावल जिले के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के बड़ी संख्या में विद्यार्थी सम्मिलित हुए। यथा- बी.एस. नाईक, रावेर, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कला एवं विज्ञान महिला महाविद्यालय, डोंगर पोकरा, जी.जी. खडसे महाविद्यालय, मुक्ताई नगर, सन्तश्री गाडगे जी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, भुसावल, पी.के. कोटेचा महिला महाविद्यालय, धनाजीनाना कॉलेज, फैजपुर एवं सन्तश्री गाडगे जी आईटीआई के सैकड़ों विद्यार्थी तथा युवा चेतना शिविर, बोदवड के 400 युवा शामिल हुए।

श्री बंसल को मिला राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

अंबाला छावनी (पंजाब) : गायत्री शक्तिपीठ अंबाला छावनी के कर्मठ कार्यकर्त्ता व सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रिंसिपल श्री रमेश बंसल को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, युवाओं को संस्कारवान, भारतीय परंपरागत कलाओं के संवर्धन, नशा मुक्ति, एड्स, पोलियो एवं भारतीय संस्कृति के उत्थान आदि में योगदान के लिये 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-अवंतिका स्वर्णिम भारत सम्मान- 2015' प्रदान किया गया।

सम्मान समारोह नई दिल्ली स्थित कॉन्सीच्युशन क्लब के भव्य सभागार में आयोजित किया गया। पंजाब केसरी के मुख्य संपादक- विजय चोपड़ा, अवंतिका के राष्ट्रीय निदेशक- डॉ. आनंद अग्रवाल, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता- डॉ. संबित पात्रा, दिल्ली सरकार के आयुक्त- श्री आर. के. शर्मा आदि की उपस्थिति में श्री बंसल को सम्मानित किया गया।

जिलाधिकारी ने शांतिकुंज के आयुर्वेद विकास कार्यों को सराहा

बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश) : 4 नवम्बर को हुए जनपदीय आयुर्वेद चिकित्सक शिविर में जनपद के आयुर्वेद चिकित्सकों के बीच शांतिकुंज का संदेश लेकर वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ ओ.पी. शर्मा की टोली पहुंची। उन्होंने आयुर्वेद के विकास पर शांतिकुंज द्वारा चलाये जा रहे अभियानों की जानकारी दी। अपने कई दशक के चिकित्सकीय अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि प्रकृति के अनुसार जीवनचर्या रहने से लंबी आयु प्राप्त होती है। आहार-विहार के साथ विधेयात्मक चिंतन से तन, मन स्वस्थ रहता है। सत्साहित्य के नियमित स्वाध्याय से वैचारिक बल मिलता है,

जिलाधिकारी को युगसाहित्य भेंट करते डॉ ओ.पी. शर्मा

जो बुराइयों से लड़ने के लिए औजार के रूप में कार्य करता है। पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी द्वारा बतायी घरेलू चिकित्सा पद्धति पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर जिलाधिकारी सुश्री बी चन्द्रकला ने शांतिकुंज, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा आयुर्वेद विकास के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों को जानकर प्रसन्नता व्यक्त की। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने उन्हें शांतिकुंज आने का आमंत्रण दिया, जिसे स्वीकारते हुए जल्दी ही आने की अपनी इच्छा व्यक्त की। डॉ. शर्मा एवं गायत्री संस्कारपीठ के प्रतिनिधि श्री अनिल शर्मा ने जिलाधिकारी को युगसाहित्य भेंट किया। उन्होंने कहा कि मुझे युगऋषि के कुछ साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिला। ऐसे युगसाहित्य को सभी को नियमित रूप से पढ़ना चाहिए।

लोग क्या कहते हैं, इस पर ध्यान न दें। सिर्फ यह देखें कि जो करने योग्य था, वह बन पड़ा या नहीं।

युग साहित्य घर-घर स्थापित करने में जुटे सृजन सैनिक

दिल्ली में युगऋषि के स्वास्थ्य संवर्धन साहित्य की प्रदर्शनी, देसंविवि को मिला विशेष स्थान

नई दिल्ली :

नई दिल्ली में संसद भवन के निकट तालकटोरा स्टेडियम में 4 से 8 नवंबर की तिथियों में एमटीएनएल हेल्थ मेला लगाया गया। इसमें पूज्य गुरुदेव द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन पर लिखित साहित्य स्टाल, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय स्थित गौशाला के विभिन्न उत्पाद लोगों में आकर्षण के केन्द्र रहे। मेले में केन्द्र व दिल्ली सरकार के कई विभागों ने हिस्सा लिया।

इसका उद्घाटन स्वास्थ्य मंत्री (दिल्ली सरकार) श्री सत्येन्द्र जैन एवं आयोजन दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार श्री ज्ञानेंद्र सिंह ने किया। पूरे मेला परिसर में सबसे ज्यादा भीड़ गायत्री परिवार के स्टालों में रही और लोगों ने युग साहित्य व शांतिकुंज-पंचांग, गौ-उत्पादों जैसे फेसपैक, साबुन, शैम्पू, मंजन, तेल व गौमूत्र काफी मात्रा में खरीदे।

अखंड ज्योति व युग निर्माण योजना व युग निर्माण मिशन के अन्य पत्र-पत्रिकाओं के भी बड़ी संख्या में सदस्य बनाये गये।

अंत में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के महासचिव पद्मश्री डॉ. के.के.अग्रवाल ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी के लिए देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा डा. प्रियंका सर्राफ, गायत्री परिवार की श्रीमती सीमा शर्मा, श्रीमती प्रज्ञा शुक्ला, सुश्री गायत्री सक्सेना, सुश्री प्रेरणा अग्रवाल, श्री रवि चौधरी, श्री अनिल चौहान को सम्मानित कर प्रमाण पत्र दिए। गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री आर. एन. सिंह व श्री यू.सी. गुप्ता ने भी आयोजन स्थल पर पहुंचकर आयोजक मण्डल का उत्साहवर्धन किया।

शिक्षण संस्थानों में युग साहित्य पहुँचा रही हैं बहिनें

युगसाहित्य को कौतूहल से निहारते विद्यार्थी

गोधरा, पंचमहल (गुजरात) :

गायत्री शक्तिपीठ गोधरा की महिला मण्डल की बहिनों ने युग साहित्य विस्तार वर्ष के अंतर्गत शिक्षण संस्थानों में युग साहित्य पहुंचाने का विशेष अभियान चलाया है। इसके अंतर्गत अब तक न्यू ईरा हाईस्कूल, मेहता हाईस्कूल, आईटीआई गोधरा, नालंदा स्कूल, कलरव स्कूल आदि स्थानों में पुस्तक मेला लगा चुके हैं। यहाँ के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए समय-समय में पुस्तक मेला लगाते रहने का आग्रह किया। इन शिक्षकों ने एकमत से स्वीकार किया कि युगऋषि पूज्य आचार्य जी ने जिस साहित्य की रचना की है, उन साहित्य की इन दिनों युवापीढ़ी के लिए नितांत आवश्यकता है। आज के युग के लिए इसे संजीवनी कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इन कार्यक्रमों में मंजूबेन साकला, लताबेन सुथार, उषाबेन पंड्या, ज्योत्सनाबेन बघेल, मीनाबेन सुथार, धर्मिष्ठाबेन आदि की विशेष योगदान रहा।

भागवत कथा स्थल में भी पुस्तक मेला

मोरबी (गुजरात) :

मोरबी एवं भावनगर के गायत्री परिजनों ने युग साहित्य विस्तार वर्ष के अंतर्गत युग निर्माण मिशन के साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विशेष अभियान चलाया है। इसके अंतर्गत 29 सितंबर से 4 अक्टूबर की तिथि में आयोजित प्रख्यात भागवत कथावाचक श्री भूपेन्द्रभाई पण्ड्या के कथा स्थल-रवापर रोड में पुस्तक मेला लगाया गया। इससे कथावाचक एवं आयोजक मण्डल भी काफी प्रसन्न हुए।

श्रद्धालु कथा श्रवण के बाद सीधे साहित्य स्टाल पर पहुंचते और जीवनोपयोगी साहित्य लेते। अपनी विविध शंकाओं का समाधान युगऋषि की किताबों में पाकर लोगों के चेहरों की प्रसन्नता स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

सैकड़ों श्रद्धालु एवं विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी नित्य साहित्य स्टाल पर आते और साहित्य खरीदते। श्री हरीशंकर भाई पण्ड्या एवं नंदलालभाई के अनुसार छः दिन तक पुस्तक मेले में चार लाख से अधिक मूल्य का साहित्य खरीदा गया। प्रायः सभी ने कहा कि जीवन जीने की कला सिखाने वाले ऐसे साहित्य की आज हर व्यक्ति को जरूरत है।

युगऋषि के साहित्य की ओर आकर्षित हो रहा प्रबुद्ध वर्ग

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) :

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर लखनऊ के मोती महल लॉन में अपनी शृंखला का 25वाँ पुस्तक मेला लगाया गया। 1 से 11 अक्टूबर की तिथि में आयोजित इस मेला में राज्यपाल महामहिम श्री राम नाईक, जिलाधिकारी श्री राज शेखर, पूर्व मुख्य सचिव श्री शंभूनाथ, पूर्व मंडल आयुक्त श्री आर.के. मित्तल, महापौर श्री दिनेश शर्मा, वरिष्ठ पत्रकारगण, व अनेक गणमान्य नागरिक पहुंचे। सभी ने युगऋषि के साहित्य का अवलोकन कर इसे वर्तमान समय के लिए आवश्यक बताया और कहा कि इसे जन-जन तक पहुँचाने में जिस तरह से गायत्री परिवार जुड़ा है, इससे एक आशा की किरण दिखाई दे रही है। हम कह सकते हैं कि युवा वर्ग निश्चित ही भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर होगा।

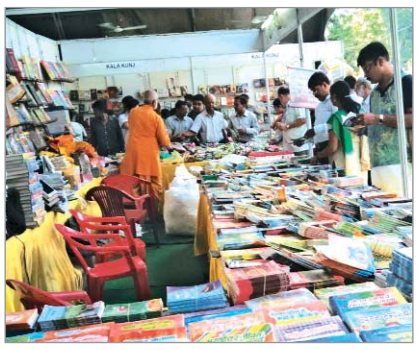

विराट् पुस्तक मेला में प्रबुद्ध वर्ग की रही भीड़

समापन अवसर पर जिलाधिकारी श्री राजशेखर ने मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री उमानन्द शर्मा को ज्ञान यज्ञ के प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

युग संगीत प्रशिक्षण शिविर (त्रैमासिक)

नया सत्र 1 जनवरी 2016 से आरंभ (केवल भाइयों हेतु)

शांतिकुंज में नियमित रूप से चल रही त्रैमासिक युग संगीत प्रशिक्षण सत्र शृंखला का अगला शिविर 1 जनवरी 2016 से आरंभ हो रहा है। इन शिविरों में भारतीय संत परंपरा के अनुरूप भक्तिभाव प्रवाहित करने वाले संगीत और युगगायन का प्रशिक्षण दिया जाता है। क्षेत्रीय कार्यक्रमों में संगीत की माँग को पूरा करने की दृष्टि से ये शिविर बहुत उपयोगी हैं।

इस प्रशिक्षण शिविर में वे ही भाई भाग लें, जो गायत्रीतीर्थ शांतिकुंज में एक मासीय युगशिल्पी या परिव्राजक सत्र कर चुके हैं और अपने क्षेत्र, शक्तिपीठ या टोलियों में संगीत के साथ अपना योगदान देते हैं या देना चाहते हैं। जो शक्तिपीठ-शाखाएँ संगीत की दृष्टि से स्वावलम्बी बनना चाहती हैं, वे योग्य परिजनों को इन शिविरों में भेजें।

पूर्व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें। सूचना एवं पूछताछ के लिए गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के संगीत विभाग के **फोन** - 01334-260602, 260403 एक्सटेंशन-190 से संपर्क करें।

साहित्य मेले से उभरे नये संकल्प

सतना (मध्यप्रदेश) :

27 सितम्बर से 5 अक्टूबर के बीच सतना में पुस्तक मेला का सफल आयोजन हुआ। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिलाधिकारी श्री संतोष मिश्रा, महापौर श्रीमती ममता पाण्डेय, शिक्षाविद् डॉ हर्षवर्धन श्रीवास्तव आदि गणमान्यों ने दीप प्रज्वलन कर किया।

पुस्तक मेले में आये सिक्ख व मुस्लिम युवाओं ने भी इसमें खासी रुचि दिखाई व युगऋषि का साहित्य बड़ी संख्या में ले गये। जनपद के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों ने अपने पुस्तकालय हेतु एवं साहित्य प्रेमियों ने साहित्य में खरीदे। कई प्राचार्यों ने विद्यालयों में होने वाले प्रतियोगिता में युगसाहित्य ही पुरस्कार स्वरूप देने का निर्णय लिया, ताकि इन पुस्तकों के प्रकाश से विद्यार्थी को नवजीवन प्राप्त हो सके। साथ ही कहा कि उन्हें नियमित रूप से पठन-पाठन के लिए भी प्रेरित किया जायेगा। कार्यक्रम की उपलब्धि से उत्साहित परिजनों ने जनपद के कई स्कूल, कॉलेजों में भी पुस्तक मेला लगाने का संकल्प लिया।

दस दिवसीय इस मेले में म.प्र. लघु उद्योग निगम के अध्यक्ष श्री योगेश ताम्रकर, अतिरिक्त कलेक्टर श्री आर.सी. दुबे आदि ने समय-समय पर मेला लगाते रहने की बात कही। पुस्तक मेले के आयोजन में श्री महेन्द्र तिवारी, राजकुमार लढ्ढा, सुश्री रेखा आदि की विशेष भूमिका रही।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी

परिजनों के लिए अत्यंत आवश्यक ज्ञातव्य

दिनांक : 28 से 31 जनवरी 2016

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ में स्थान सीमित होने के कारण वहाँ जाने वाले परिजनों को असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए निम्न निर्देशों का सख्ती से पालन करें।

- समयदान करने के लिए परिजन पूर्व स्वीकृति लिये बिना न पहुँचें।
- इस अश्वमेध यज्ञ की सफलता के लिए परिजनों से विशेष साधना करने का निवेदन किया गया था। यह साधना करने वाले परिजनों को दक्षिण जोन, शांतिकुंज में अपना पंजीयन अवश्य करा लेना चाहिए।
- अपना पंजीयन कराने वाले परिजनों को ही यज्ञ में भाग लेने जाने की स्वीकृति दी जायेगी।
- कन्याकुमारी में आवासीय व्यवस्था केवल टेंटों में ही है। अपने ओढ़ने-बिछाने के कपड़े साथ लेकर पहुँचे। यदि होटल में रहना चाहते हों, तो उसका खर्च स्वयं को ही वहन करना होगा। इस संबंध में 04652246575, 09486150021 या Email: info@triveni.com पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- पंजीकृत साधक 27 जनवरी से पहले कन्याकुमारी न पहुँचें। वहाँ आवास की व्यवस्था केवल 27 से 31 जनवरी तक की ही है। 31 जनवरी के बाद यज्ञस्थल पर रहने की व्यवस्था नहीं होगी। तद्नुसार वापसी की पूर्व व्यवस्था कर लें।
- अति वृद्ध और बीमार परिजन न जायें। अपने साथ छोटे बच्चे एवं किसी प्रकार का कीमती सामान लेकर न जायें।
- जिन्हें इस यज्ञ में पहुँचने का अवसर नहीं प्राप्त हो रहा, ऐसे परिजन साधना या अंशदान करते हुए इस यज्ञ में भागीदारी कर पुण्यलाभ प्राप्त कर सकते हैं। अपना अंशदान शांतिकुंज के निम्न खाते में जमा कर सकते हैं।

Account: Kanyakumari Ashwamedh Mahayagya

Bank	A/C No.	IFCSC Code
Axis	156010100013846	UTIB0000156
BOB	09260100004639	BARBOHARDWA
CBI	1577841575	CBINO280274
SBI	10876858311	SBIN0002350
PNB	3129010100000018	PUNBO469400

- अंशदान एकत्रित करने के लिए जिन्हें रसीद बुक की आवश्यकता है, वे दक्षिण जोन, शांतिकुज से सम्पर्क करें।

फोन नम्बर - 092583 60651

चिर निद्रा में सोये युग निर्माणी

डॉ मनोज राव, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज :

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग में असि. प्रोफेसर के रूप में सेवारत डॉ. मनोज राव का 2 नवम्बर को निधन हो गया। वे 41 वर्ष के थे। डॉ राव 2004 से देसंविवि परिवार से जुड़कर युवाओं को गढ़ने तथा विद्यार्थियों के विकास के लिए विविध कार्यक्रम संचालित करते रहे। सरल व मृदुभाषी डॉ राव विद्यार्थियों के प्रिय शिक्षकों में से एक थे।

श्रीमती बबीबेन खोडीदास पटेल, बालीसणा, पाटन (गुजरात)

गायत्री प्रज्ञापीठ बालीसणा की सक्रिय कार्यकर्ता श्रीमती बबीबेन खोड़ीदास पटेल का 30 सितंबर को 71 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

श्री धर्मपाल मदान, सोनीपत (हरियाणा) :

गायत्री शक्तिपीठ वैक्सन कालोनी में मुख्य ट्रस्टी रहे श्री धर्मपाल मदान का 30 अक्टूबर को निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। स्व. श्री मदान निकटवर्ती स्थानों में युग निर्माण मिशन को घर-घर पहुंचाने में अथक परिश्रम करते रहे।

श्री कृष्णलाल गुप्ता, जालंधर (पंजाब) :

गायत्री परिवार जालंधर के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री कृष्णलाल गुप्ता का 5 नवम्बर को 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अखंड ज्योति एवं युग निर्माण मिशन की विभिन्न पत्रिकाओं एवं सत्साहित्य के विस्तार में जुटे हुए थे।

श्रीमती राजेश्रीबेन, दहेगाम, गांधीनगर (गुजरात) :

गायत्री शक्तिपीठ दहेगाम के ट्रस्टी श्री कल्पेशभाई रावल की धर्मपत्नी श्रीमती राजेश्रीबेन का 25 अक्टूबर को देहावसान हो गया।

श्रीमती विद्युत लता, बालेश्वर (ओडिशा) :

गायत्री प्रज्ञापीठ बालेश्वर के निर्माण में विशेष योगदान देने वाली श्रीमती विद्युत लता साहाणी का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे निःसहाय लोगों की मदद के लिए सदैव आगे रहती थी।

इस दुःखद वेला से उबरने की शक्ति एवं सामर्थ्य इन सबके परिवार जनों को मिले, ऐसी आद्यशक्ति जननी माँ गायत्री से हम सब हृदय से प्रार्थना करते हैं।

नारी अभ्युदय की दिशा में ग्वालियर उपजोन द्वारा चलाया जा रहा है सशक्त अभियान

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुए विशिष्ट कार्यक्रम

ग्वालियर शाखा द्वारा नारी को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाबलंबन, सुरक्षा एवं समान अवसर प्रदान करने के लिये लगातार गंभीर प्रयास किये जाते रहे हैं। इसी कड़ी में 1 एवं 2 नवम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में बड़े कार्यक्रम उपजोन कार्यालय द्वारा आयोजित किये गये। इन्हें नारी सशक्तीकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी उद्घोष माना जा रहा है, जो नारी को पुनः अपने मौलिक आदर्शों को अपनाकर समाज का नवनिर्माण करने के लिए प्रेरित करेगा। इन कार्यक्रमों से जहाँ समाज और सरकार के मूर्धन्यों ने प्रेरणा पायी, वहीं गायत्री परिवार की तमाम क्षेत्रीय शाखाओं को नारी अभ्युदय की दिशा में सक्रियता के लिए अभीष्ट ऊर्जा और आवश्यक दिशा प्राप्त हुई।

आदरणीय डॉ. साहब के दो दिवसीय प्रवास में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ, जिसने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को बल दिया।

2 नवंबर को प्रातः गायत्री ज्ञान मंदिर पिण्टो पार्क में आदरणीय डॉ. साहब ने ग्वालियर जिले के सभी संस्थानों के ट्रस्टियों एवं जिला समन्वय समिति के पदाधिकारियों से विशेष चर्चा की। इसमें उन्होंने सभी को परस्पर तालमेल पूर्वक परम पूज्य गुरुदेव के अंग अवयव बनकर कार्य करने और समन्वित शक्ति से मिशन को नयी बुलंदियों तक पहुँचाने के लिए दिशा-प्रेरणा दी।

श्री अनंग पाल सिंह भदौरिया, श्री ओ.पी. गुप्ता, श्री कमलेश गुप्ता के समग्र मार्गदर्शन में दोनों दिन के सभी कार्यक्रम बड़े सुव्यवस्थित और सफल रहे। सभी कार्यक्रमों के संयोजन का दायित्व अलग-अलग कार्यकर्त्ताओं को सौंपा गया था।

सुंदरता और सम्पन्नता नहीं, संवेदना और संस्कार ही हैं नारी सशक्तीकरण का आधार

लक्ष्मीबाई शा. शिक्षण महाविद्यालय में संगोष्ठी

दिनांक 1 नवंबर को ग्वालियर के एल.एन.यू.पी.ई. के टैगोर सभागार में प्रातःकाल 'नारी अभ्युदय' नारी सशक्तीकरण एवं राष्ट्रीय विकास विषय पर एक बृहद् संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी एवं विशिष्ट अतिथि जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर की कुलपति डॉ. संगीता शुक्ला थीं।

आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने आज के प्रगतिशील युग में भी समाज की गिरती सोच और महिलाओं पर निरंतर बढ़ते अत्याचार एवं शोषण, लड़का-लड़की में भेदभाव पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने कहा कि नवरात्रि में नारी के नौ रूपों की पूजा-आराधना की जाती है। देवियों की पूजा का यह भाव प्रतिदिन बना रहे तो निश्चित रूप से नारी शक्ति के प्रति सम्मान की भावना का विकास होगा। सफल दाम्पत्य जीवन जीने की कला सीखने के लिये आदरणीय डॉ. साहब ने जयप्रकाश नारायण, महात्मा गाँधी एवं पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के दाम्पत्य जीवन के उदाहरण प्रस्तुत किये।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने समाज सुधार के अनेक प्रकल्पों पर कार्य कर रही स्वयंसेवी संस्था 'गूँज' की सराहना करते हुए ऐसी संस्थाओं के साथ मिलकर काम करने का आह्वान किया। उन्होंने ग्वालियर शाखा द्वारा नारी शिक्षा, नारी समानता, स्वाभिमान की सुरक्षा एवं संवेदना की आवश्यकता की विस्तार से चर्चा की, मार्गदर्शन दिया।

उन्होंने फरवरी 2012 के दिल्ली में हुए निर्भया काण्ड का उल्लेख करते हुए कहा कि नारी पर अत्याचार करने वाले दुस्साहसियों को ऐसी कड़ी सजा दी जानी चाहिए कि कोई ऐसा करने की सोच भी न सके।

डॉ. संगीता शुक्ला, कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय ने कहा कि महिला में पृथ्वी जैसी विशालता, समुद्र जैसी गहनता, सूर्य जैसी चमक तथा चंद्रमा जैसी शालीनता मौजूद है। इन गुणों को संरक्षित एवं विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने गायत्री परिवार द्वारा महिलाओं के उत्थान एवं सम्मान के लिए चलाये जा रहे विशेष आन्दोलन के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया। श्रीमती श्रद्धा शुक्ला कार्यक्रम संयोजक थीं।

एक्सपोर्ट फेसिलिटेशन सेंटर में नारी जागरण दीपयज्ञ

आद. डॉ. साहब मंच पर विशिष्ट अतिथि श्रीमंत यशोधरा राजे से चर्चा करते हुए

शरद चंद्र, गाँधी, विनोबा के नारी जागरण अभियान को गति दे रहा है गायत्री परिवार

1 नवंबर 2015 को सायंकाल एक्सपोर्ट फेसिलिटेशन सेन्टर, मेला परिसर में 'युग परिवर्तन में महिलाओं की भागीदारी एवं संकल्प दीप महायज्ञ' का विशिष्ट आयोजन हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी ने इस विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि नारी सशक्तीकरण के लिए शरद चन्द्र चट्टोपाध्याय, आचार्य विनोबा भावे तथा महात्मा गाँधी ने जो कार्य किये गायत्री परिवार उन्हें आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। देशभर में स्थापित लाखों महिला मण्डल बहिनों को साहसी, सद्गुणी, संस्कारवान बना रहे हैं।

दिया ने इस दिशा में क्रांतिकारी पहल की है। यह युवा संगठन नयी पीढ़ी के बहकते और भटकते कदमों को सही दिशा देकर राष्ट्र के नवनिर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। दिया के सदस्य गाँवों और कस्बों में जाकर महिला जागृति अभियान का शंखनाद कर रहे हैं।

डॉक्टर साहब ने युवकों से कहा कि वे सत्पुरुषों का, अच्छे विचारों का सत्संग कर अपना चिंतन और दृष्टिकोण बदलें, ताकि स्त्री के कपड़े, उनके गुण दिखाई दें, उनके प्रति हृदय में सम्मान बढ़े। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के नारी सशक्तीकरण के प्रयासों की जानकारी देते हुए कहा कि युग परिवर्तन अवश्यंभावी है और इस परिवर्तन में महिलाओं की विशिष्ट भूमिका रहेगी।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि श्रीमंत यशोधरा राजे सिंधिया, उद्योग, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री म.प्र. शासन थीं। उन्होंने राजमाता स्व. विजया राजे सिंधिया के समर्पण एवं आध्यात्मिक शक्ति से सदन को परिचित कराया। उन्होंने कहा कि हम जैसे राजनेताओं को समर्पण, विवेकशीलता एवं आध्यात्मिकता गायत्री परिवार से सीखनी है और मैं निश्चित ही इसका अनुसरण करूँगी। मंत्री महोदया ने कहा कि शान्तिकुंज द्वारा चलाये जा रहे इस आंदोलन की म.प्र. सरकार भी मदद करेगी।

कार्यक्रम का शुभारंभ वर्तिका सक्सेना द्वारा निर्देशित एवं लिखित तथा दिया के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत लघु संगीत नाटिका के साथ हुआ।

इसमें श्री ए.पी.एस. भदौरिया, कार्यक्रम संयोजक द्वारा रचित पुस्तक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री व्ही.के. गुप्ता ने और आभार प्रदर्शन ब्रजेश कुमार गुप्ता ने किया।

आद. डॉ. प्रणव जी एवं डॉ. संगीता शुक्ला विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान करते हुए

विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान

कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाली 6 महिलाओं को सम्मानित किया गया। समाजसेवा क्षेत्र में साबा रहमान, राजनीतिक क्षेत्र में सुमन शर्मा, साहित्यिक क्षेत्र में डॉ. मंदाकिनी शर्मा, शिक्षा क्षेत्र में अनिता जायसवाल, कला क्षेत्र में सुनीता राय एवं क्रीड़ा क्षेत्र में रजनी झा को विशिष्ट सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

> नारी के प्राकृतिक गुण समर्पण, त्याग एवं सहनशीलता आदि के विकास के लिए किये गये प्रयास ही नारी सशक्तीकरण की दिशा में उठाये गये सार्थक कदम हैं। बहिनों द्वारा अपनी मौलिक संवेदना को खोकर शारीरिक सुंदरता और आर्थिक सम्पन्नता के लिए किये गये प्रयास जीवन में अविश्वास, अशांति, परिवार में कलह और तनाव ही उत्पन्न करते हैं। सद्गुणी-संस्कारवान नारियाँ ही देश और समाज को उज्ज्वल भविष्य प्रदान करेंगी।
>
> - आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

देशभक्त, सृजनशील, संस्कारवान बच्चे ही राष्ट्र की सच्ची सम्पदा होते हैं

पंडित श्रीराम शर्मा उत्कृष्ट शिक्षा सम्मान समारोह

डॉ. प्रणव जी एवं स्कूली शिक्षामंत्री श्री पारस जैन शिक्षकों को सम्मानित करते हुए

2 नवंबर को चेंबर ऑफ कॉमर्स में 'पंडित श्रीराम शर्मा उत्कृष्ट शिक्षा सम्मान' समारोह आयोजित हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं स्कूली शिक्षामंत्री माननीय श्री पारस जैन इसके मुख्य अतिथि थे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी ने कहा कि मनुष्य में जीवन मूल्यों की जन्मदाता विद्या ही है। पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. अब्दुल कलाम का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि सच्चा विद्यार्थी कैसे एक साधारण से व्यक्ति से महामानव बन जाता है। उन्होंने शिक्षा के बढ़ते औद्योगीकरण पर चिंता व्यक्त की और उसे रोकने का आह्वान किया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के उद्देश्य की चर्चा करते हुये डॉ. साहब ने कहा कि इस परीक्षा ने अपनी संस्कृति के प्रति लाखों विद्यार्थियों की श्रद्धा-निष्ठा बढ़ायी है। देशभक्त, सृजनशील, संस्कारवान बच्चे ही राष्ट्र की सच्ची संपदा होते हैं। यही देश का भविष्य निर्धारित करते हैं।

स्कूली शिक्षामंत्री श्री पारस जैन ने गायत्री परिवार द्वारा दिये गये सुझावों को मध्य प्रदेश की शिक्षा प्रणाली में लागू करने के प्रयास करने का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि उनकी सरकार ने भी सभी विद्यालयों-महाविद्यालयों को भासंज्ञाप. में अधिक से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित कराने के निर्देश दिये हैं, ताकि बच्चों में उत्तम संस्कार के बीज रोपे जा सके।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन में अमूल्य योगदान देने वाले 9 शिक्षकों को आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी एवं माननीय श्री पारस जैन ने प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, दुपट्टा एवं युग साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने वहाँ उपस्थित शांतिकुंज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ समन्वयक डॉ. पी.डी. गुप्ता को सदन में से बुलाकर विशेष रूप से सम्मानित किया। अंत में सभी को युग साहित्य एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का केलेण्डर वितरित किया गया। कार्यक्रम संयोजक गनपत मिश्रा थे।

सम्मानित हुए शिक्षक

श्रीमती शर्मिला सरकार, डॉ. पंकज तिवारी, मधुकर चौहान, महेश श्रीवास्तव, धीरज सिंह गुर्जर, के. प्रसाद शर्मा, पी.सी. गुप्ता, प्रदीप गुप्ता एवं श्रीमती संतोष अरोरा

नकारात्मकता से मुक्ति पायें, स्वयं बढ़ें और देश को बढ़ायें

नगर के विख्यात आई.पी.एस. महाविद्यालय में 'हम बढ़ें, देश बढ़ेगा' विषय पर आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने का पहला कदम नकारात्मक ऊर्जा को बाहर करने तथा सकारात्मक ऊर्जा को प्रवेश देने का प्रयास करना है। उन्होंने विद्यार्थियों को एक दिन के जीवन कल्पना कर 'हर दिन नया जन्म और हर रात नयी मौत' का अभ्यास करने की प्रेरणा दी, ताकि जीते जी बंधनमुक्ति की अनुभूति की जा सके।

आदरणीय डॉ. साहब ने विद्यार्थियों को कुशल प्रबन्धन के सूत्र देते हुये कहा कि राष्ट्र की प्रगति के लिये युवा शक्ति को रचनात्मक कार्यक्रम अपने हाथ में लेने होंगे। व्याख्यान के दौरान महाविद्यालय के समस्त स्टाफ एवं 300 से अधिक विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय के निदेशक श्री अरुण कुमार ने शांतिकुंज प्रतिनिधि का स्वागत किया तथा महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रज्ञा गीत का गायन किया गया।

प्रकाश पर्व की वेला में जीवन को ज्योतित करती युगतीर्थ की मंगल प्रेरणाएँ

दीपावली का संदेश प्रकाशित जीवन और अर्थानुशासन

दीपोत्सव में समाधि स्थल पर परिजन एवं पर्व की प्रेरणा देते आद. डॉ प्रणव पण्ड्या जी व (इनसेट में) बही खाते का पूजन करती आद.जीजी

गायत्री तीर्थ परिसर में दीपोत्सव का महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आदरणीय डॉ साहब ने अपने संदेश में कहा कि दीवाली अर्थानुशासन का महापर्व है। दीवाली सुख-समृद्धि का संदेश देती है, लेकिन यह सौभाग्य उन्हें ही मिलता है जो धन का सही उपयोग करने की कला जानते हैं। सुख अधिक धन कमाने में नहीं, धन का सदुपयोग करने में है। बाँटने में सुख निहित है, बटोरने में नहीं। ज्योति पर्व पर जलते दीपकों से हमें यही प्रेरणा लेनी चाहिए। दीपक अपने भीतर के तेल (स्नेह) की एक-एक बूंद जलाकर जग को प्रकाशित करते हैं। उन्होंने कहा कि उसी मनुष्य का जीवन धन्य है, जिसका तन, मन, धन केवल अपने ही नहीं वरन् सारे समाज को प्रेरणा प्रकाश देने में लग जाये। दीपावली में लक्ष्मीजी के साथ गणेश जी का पूजन धन का विवेकपूर्वक उपार्जन एवं उपयोग करने की प्रेरणा देता है।

इस वर्ष के दीपावली इको फ्रेण्डली मनाई गयी। इस अवसर पर महिला मण्डल की बहिनों ने पूरे परिसर को लक्ष्मी, गणेश व मोर की सुन्दर कलाकृतियों रंगोली से सजाया था। वहीं अंतेःवासी कार्यकर्त्ताओं, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिविरार्थियों ने पटाखों से परहेज करते हुए दीपों के साथ दीपोत्सव का पर्व मनाया। आद. डॉ. साहब-आद. जीजी ने भी दीपोत्सव को दीप के उत्सव के रूप में मनाने की प्रेरणा दी।

दीवाली के मुख्य कार्यक्रम के दौरान आद. जीजी एवं आद. डॉ साहब ने लेखा विभाग प्रभारी श्री हरीश भाई ठक्कर के सहयोग से बही-खाता एवं कम्प्यूटर के की-बोर्ड एवं माउस का पूजन किया। उल्लास भरे गीतों के बीच दीपमहायज्ञ सम्पन्न हुआ। खील- बतासों का प्रसाद बाँटा गया। सैकड़ों परिजनों ने पावन समाधि स्थल पर दीपदान कर अपनी भावाव्यक्ति प्रकट की।

इस अवसर पर देवसंस्कृति विश्वविद्यालय व शांतिकुंज के कई बच्चों ने वृक्षारोपण किया। पर्व के कुछ दिन पूर्व आद. डॉ साहब ने विद्यार्थियों को पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दीपोत्सव मनाने की प्रेरणा दी थी, तद्नुसार विद्यार्थियों ने पटाखे जलाने के स्थान पर वृक्षारोपण किया और इसे बड़े होने तक उसका संरक्षण करने का संकल्प भी लिया।

गोसंवर्धन में निहित है राष्ट्र की समृद्धि

12 नवम्बर को देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिसर स्थित गौशाला में सैकड़ों भाई-बहिनों की उपस्थिति में गोवर्धन पूजा हुई। इस अवसर पर सभी के प्रतिनिधि के रूप में आदरणीय डॉ प्रणव पण्ड्या जी ने गौ माता एवं गोबर से बने गोवर्धन का पूजन किया।

गौमाता को भारतीय संस्कृति की रीढ़ बताते हुए आदरणीय डॉ साहब ने इसके संरक्षण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गोवंश की वृद्धि के साथ ही राष्ट्र आर्थिक रूप से सशक्त होगा। इस निमित्त गायत्री परिवार के अलावा कई संगठन अनेक आंदोलन चला रहे हैं जो एक शुभ संकेत है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने ग्वालबालों के माध्यम से गोसंवर्धन, गोपूजन का जो आंदोलन चलाया, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। परिष्कृत संवेदनाएँ ही मानव उत्थान के लिए कार्य करती है। पूज्य गुरुदेव ने भी मानवीय संवेदना को परिष्कृत करने के लिए अपनी तप शक्ति लगाई है। साथ ही उन्होंने गौशाला में आईसीयू बनाने की बात कही।

समारोह में छत्तीसगढ़ के भाइयों ने अपनी परंपरानुसार बैण्ड की धुन पर राउत नाच के साथ अपना उल्लास व्यक्त किया। गोबर का तिलक एवं पंचामृत वितरण कर एक दूसरे को शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर गोशाला प्रभारी, श्री डी.पी. सिंह, आदि उपस्थित थे।

गोवर्धन व गौमाता का पूजन करते कुलाधिपति आदरणीय डॉ पण्ड्या जी

प्रकृति के अनुरूप जीवन देता है स्वास्थ्य और उमंग

धन्वन्तरी जयंती पर मुख्य सभागार में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें आचार्य श्रीराम शर्मा जन्मशताब्दी चिकित्सालय, शांतिकुंज फार्मेसी एवं देवसंस्कृति विवि चिकित्सालय के चिकित्सकों ने भाग लेते हुए प्रकृति के अनुसार जीवनचर्या, आहार-विहार रखने पर बल दिया।

इस अवसर पर आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, डॉ अमल कुमार दत्ता, डॉ. ओ.पी. शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा, डॉ. वन्दना श्रीवास्तव, डॉ. अल्का मिश्रा आदि चिकित्सकों ने भगवान धन्वन्तरी के पौराणिक कथानकों के माध्यम से वर्तमान के आपाधापी भरे जीवन में संयमित जीवन जीने की सलाह दी।

इस अवसर पर भगवान धन्वन्तरी की भव्य झांकी सजाई गयी। युग गायकों ने आयुर्वेद महान जैसे कई गीतों से लोगों के मन को झंकृत कर दिया।

चेतना दिवस पर विद्यार्थियों ने कुलाधिपति को दिया अनुपम उपहार

दीपावली के एक दिन पूर्व गायत्री परिवार प्रमुख आदरणीय डॉ प्रणव पण्ड्या जी ने पांच दीप जलाकर अपना 66वां जन्मदिन सादगी से मनाया। पूज्य पिता पूर्व न्यायाधीश श्री सत्यनारायण पण्ड्या जी सहित शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, देसंविवि परिवार, गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने अपने अभिभावक को पुष्पगुच्छ भेंट कर अपनी शुभकामनाएँ दीं।

सायं देवसंस्कृति विवि. ने अपने अभिभावक आदरणीय डॉ प्रणव पण्ड्या जी का जन्मदिन रूप चतुर्दशी को चेतना दिवस-प्रेरणा पर्व के रूप में मनाया।

दीपयज्ञ के साथ जन्मदिन मनाते आद. डॉ साहब, आद. दीदी व आद. श्री पण्ड्या

मृत्युंजय सभागार में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने आदरणीय डॉ. साहब-आदरणीया जीजी से मिलने वाली प्रेरणाओं को सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में पिरोते हुए अपनी श्रद्धाभावना को व्यक्त किया।

ईएमडी द्वारा एक लघु वृत्त चित्र प्रदर्शित किया गया, जिसमें आदरणीय डॉ. साहब के नेतृत्व में चल रहे निर्मल गंगा जन अभियान, देसंविवि के विभिन्न पड़ाव की झलक दिखाई गयी।

शांतिकुंज में आयोजित हुआ बीएमडी टेस्ट शिविर

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज स्थित आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में 14 नवम्बर को बोन मिनरल डेंसिटी (बीएमडी) जांच शिविर का आयोजन हुआ। रायपुर, छत्तीसगढ़ से आये अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. अरुण मढ़रिया के अनुसार उम्र के बढ़ने के साथ हड्डियों में कैल्शियम तथा अन्य मिनरल्स की कमी होने लगती है, जिससे ऑस्टियो पोरोसिस जैसे रोग होने लगते हैं। जिसके कारण हड्डियाँ की कमजोर होने लगती हैं। जोड़ों में दर्द आरंभ हो जाता है। इसके साथ ही गिरने या टकराने जैसी घटनाओं में आसानी से हड्डियों में फ्रेक्चर हो जाते हैं। इसके बचाव के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि जंक फूड से दूर रहना चाहिए और नियमित व्यायाम, मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए ।

शिविर में बीएमडी परीक्षण करते विशेषज्ञ

बीएमडी टेस्ट एक पेंसिल नुमा आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक उपकरण के माध्यम से होने वाला बड़ा ही आसान टेस्ट है। इसके लिए शरीर का किसी तरह का कोई सेंपल टेस्ट के लिए नहीं देना होता। बीएमडी टेस्ट से शरीर में कैल्शियम की मात्रा का पता चलता है। इस शिविर में शांतिकुंज, हरिपुर कलाँ, भोपतवाला आदि क्षेत्रों के 250 से अधिक परिजनों ने परीक्षण कराया। जरूरतमंद लोगों को शांतिकुंज की ओर से निःशुल्क दवाइयाँ उपलब्ध करायी गयी। इस अवसर पर शांतिकुंज चिकित्सालय प्रभारी डॉ गायत्री शर्मा, डॉ ओ.पी. शर्मा, डॉ नायक आदि की भी विशेष भूमिका रही।

सुदूर उत्तर-पूर्व में फैली सांस्कृतिक जागरण की लहर

पूर्वोत्तर राज्य आसाम के सर्वोदय आंदोलन के कार्यकर्त्ताओं का गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में 3 से 7 नवम्बर के बीच पांच दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। इन्होंने गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में जप, साधना, योग आदि विषयों पर गहराई से अध्ययन किया।

आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने मार्गदर्शन करते हुए कहा कि देवसंस्कृति के सार्वभौम, प्रगतिशील एवं लोकोपयोगी निर्धारण ही राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए आशा की किरण के रूप में दिखाई दे रहे हैं। इन्हीं मौलिक विशेषताओं के आधार पर भारत जगद्गुरु बन सकता है। उन्होंने शिविरार्थियों की विविध शंकाओं का समाधान भी किया। श्री कालीचरण शर्मा, श्री परमानंद आदि ने भी मार्गदर्शन किया।

समापन के पूर्व बहिनों ने नगाड़ा वाद्य के माध्यम से विभिन्न मुद्राओं में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अंतिम दिन प्रतिभागियों ने अपने अंदर की एक बुराई छोड़ने एवं एक अच्छाई ग्रहण करने के संकल्प लिये। संत विनोबा भावे के सर्वोदय आंदोलन से जुड़े 235 भाई-बहिनों का दल शांति साधना आश्रम के प्रमुख श्री हेमभाई जी एवं श्री रवीन्द्र शर्मा महंत के नेतृत्व में गायत्री तीर्थ आया था।

सुदूर प्रांत आसाम की टीम गुरुस्मारक के निकट

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017